



UNIVERSITY OF LUCKNOW



UNIVERSITY OF LUCKNOW

(1920-2020)



॥ विद्यया प्रकाशस्य वर्षशतम् ॥

A century of leading generations to light through learning

Main Campus, University of Lucknow.





Managing Editor : **Prof. Alok K. Rai**
Vice-Chancellor
University of Lucknow

Editors : **Prof. Mukul Srivastava**
Department of Journalism
& Mass Communication
University of Lucknow

Dr. Geetanjali Mishra
Department of Zoology
University of Lucknow

Design and Layout : **Mr. Aftab Anwar**
Department of Journalism
& Mass Communication
University of Lucknow

Photography : **Mr. Anshul Mehrotra**
Alumnus, Department of Journalism
& Mass Communication
Photographer & Film Maker

Printed at : Army Printing Press, Lucknow.

First Edition 2020
Department of Journalism & Mass Communication
University of Lucknow.
website: <https://www.lkouniv.ac.in/>
In case of any query contact: srivastava_mukul@lkouniv.ac.in

All rights reserved:
No part of this work may be reproduced or used in any form or by any means (graphic, electronic, mechanical, photocopying, recording, taping, web distribution, information storage and retrieval systems or otherwise) without prior written permission of University of Lucknow, Lucknow.

Disclaimer:
University of Lucknow does not represent or endorse accuracy or reliability of any content provided in this book. Any reliance upon such content shall be at the reader's sole risk. Such content as provided in this book does not represent the views of University of Lucknow. University of Lucknow will be free from any liability for damages and losses of any nature arising from or related to the print and visual content. All disputes are subject to the jurisdiction of competent courts in Lucknow.
*Photographs on the facing page are sourced from Google.



UNIVERSITY OF LUCKNOW (1920-2020)

॥ विद्यया प्रकाशस्य वर्षशतम् ॥
A century of leading generations to light through learning

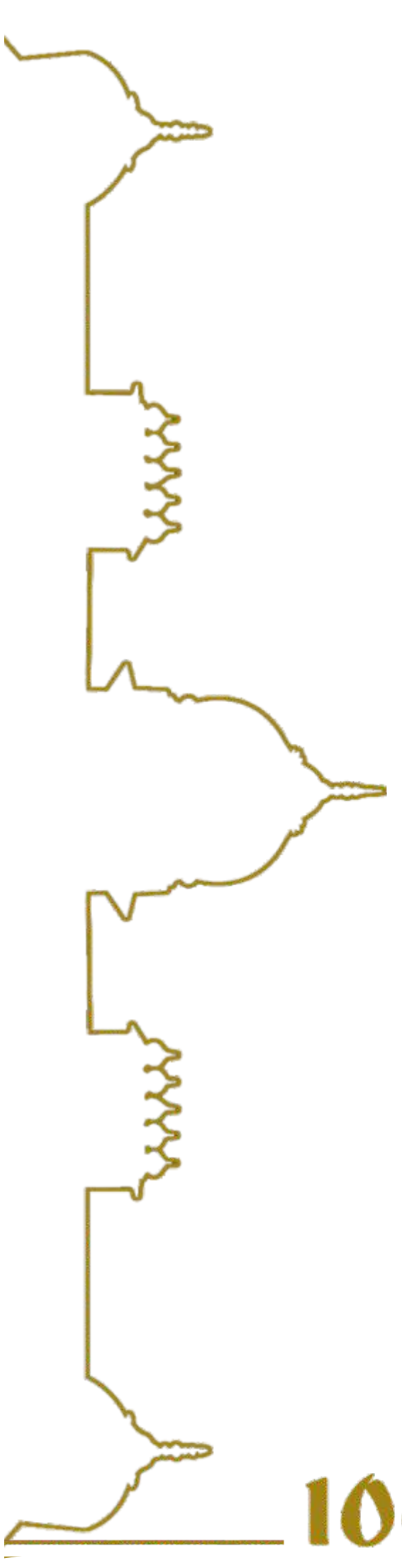


Sir Spencer Harcourt Butler, GCSI, GCIE, KSTJ
First Governor United Provinces of Agra & Oudh

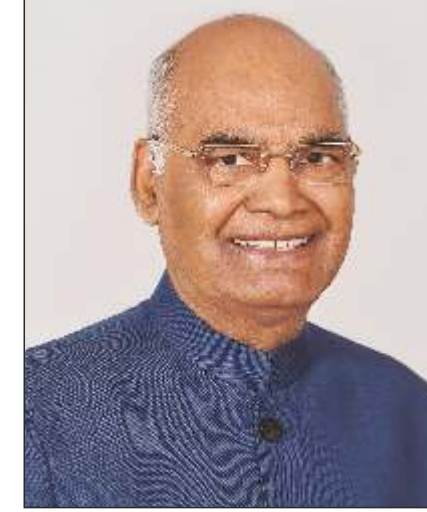


H.H. Sir Mohammad Ali Mohammad, Khan Bahadur,
Raja Mahmudabad

Proponents of the University of Lucknow



100 golden years



राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, अपने शताब्दी वर्ष का उत्सव मना रहा है। किसी शैक्षिक संस्थान के लिए 100 वर्ष की यात्रा सफलतापूर्वक पूरी करना एक विशिष्ट उपलब्धि होती है। 25 नवम्बर, 1920 को अपनी स्थापना से ही विश्वविद्यालय, शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देने के लिए सतत प्रयत्नशील रहा है। लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अनेक क्षेत्रों में राष्ट्र का मान बढ़ाया है।

विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक संस्थाओं के प्रकाशनों का अपना एक विशिष्ट स्थान और महत्व होता है। वे न केवल संस्था की छवि का निर्माण करते हैं, अपितु उसके सृजनात्मक दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित करते हैं।

शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा 'कॉफी टेबल बुक' का भी प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रहेगा।

मैं, विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के लिए और 'कॉफी टेबल बुक' के सफल प्रकाशन हेतु इसके संपादक-मंडल, समस्त शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

रामनाथकोविन्द
(राम नाथ कोविन्द)

नई दिल्ली

29 अक्टूबर, 2020



सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि लखनऊ विश्वविद्यालय अपनी स्थापना के 100 वर्ष के उपलक्ष्य पर 'शताब्दी वर्ष उत्सव' का आयोजन कर रहा है। संस्थान के लिए एक सदी की सतत यात्रा गौरवपूर्ण और उपलब्धियों से भरी है। साथ ही यह अतीत से प्रेरणा लेते हुए, विश्वास भरे वर्तमान के साथ तेज कदमों से उज्वल भविष्य की ओर बढ़ने का अवसर भी है।

गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा किसी देश की जनसंख्या को 'आबादी' की सीमित परिभाषा से निकालकर उसे 'मानव संसाधन' की विशिष्ट पहचान दिलाने की क्षमता रखती है, और इस कारण विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय प्रांगण में प्राप्त शिक्षा से छात्र न केवल अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं बल्कि उनमें समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का बोध भी विकसित होता है।

कहा गया है- 'यत् कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते', अर्थात् मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि अपने ज्ञान व ऊर्जा का सदुपयोग समाज और राष्ट्र के निर्माण में सकारात्मक योगदान देने में करें।

विश्व के सबसे युवा देशों में से एक, भारत आज यह महसूस करता है कि सब कुछ मुमकिन है, सब कुछ हासिल किया जा सकता है। यही हम भारतीयों की संकल्पशक्ति है। युवा शक्ति से ऊर्जावान देश पूरे आत्मबल और आत्मविश्वास के साथ 21वीं सदी को भारत की सदी बनाने के नूतन प्रण के साथ आगे बढ़ रहा है।

विश्वविद्यालय प्रबंधन, शिक्षकों और विद्यार्थियों को शताब्दी वर्ष की बहुत-बहुत बधाई और इस अवसर पर कॉफी टेबल बुक के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

नरेन्द्र मोदी

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
ज्येष्ठ 08, शक संवत् 1942
29 मई, 2020

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ
उत्तर प्रदेश- 226007



आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

18 मार्च, 2020

सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ द्वारा अपनी स्थापना के 100वें वर्ष के अवसर पर 'शताब्दी वर्ष 2020 काफी टेबल बुक' का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी भी शैक्षिक संस्था के लिये शताब्दी वर्ष मनाना अपने आप में एक गौरवपूर्ण क्षण होता है। विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर निकले विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में विश्वविद्यालय का नाम रोशन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मुझे आशा है कि प्रकाशित काफी टेबल बुक में विश्वविद्यालय की स्मृतियों का जीवन्त चित्रण होगा, जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी।

'शताब्दी वर्ष 2020 काफी टेबल बुक' के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

Anandiben Patel
(आनंदीबेन पटेल)



योगी आदित्यनाथ



मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संख्या-

लोक भवन,
लखनऊ - 226001

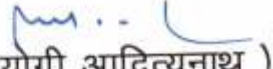
दिनांक : 17 AUG 2020

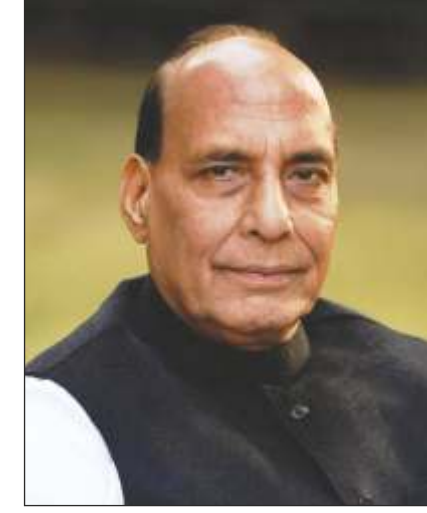
संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश कर 'शताब्दी वर्ष उत्सव' मना रहा है। इस अवसर पर 'शताब्दी वर्ष 2020-कॉफी टेबल बुक' भी प्रकाशित होगी।

शिक्षा जगत में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ का विशिष्ट योगदान है। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण किया जाना एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देते हुए मैं आशा करता हूँ कि यह शिक्षण संस्थान पूर्व की भांति विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हुए, उनके उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

शताब्दी वर्ष कार्यक्रम की सफलता एवं कॉफी टेबल बुक के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।


(योगी आदित्यनाथ)



राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH



रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

दिनांक : 17.10.2020

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश इस वर्ष अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहा है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन भी किया जा रहा है, जिसमें विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष उत्सव को चित्रबद्ध तथा लिपिबद्ध किया गया है।

विश्वविद्यालय एवं शैक्षणिक संस्थाओं के प्रकाशनों का अपना एक विशिष्ट स्थान और महत्व है। इस तरह के प्रकाशन न केवल संस्थान की छवि का निर्माण और प्रस्तुतिकरण करते हैं बल्कि एक सृजनात्मक दृष्टिकोण को भी प्रदर्शित करते हैं। अपने 100 वर्ष के गरिमामयी इतिहास में लखनऊ विश्वविद्यालय ने भारत ही नहीं पूरी दुनिया में बड़ी प्रतिष्ठा अर्जित की है। इसकी प्रतिष्ठा भविष्य में भी और अधिक बढ़ेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं लखनऊ विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित की जाने वाली 'कॉफी टेबल बुक' के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा प्रकाशन मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।


(राजनाथ सिंह)



150
YEARS OF
CELEBRATING
THE MAHATMA
रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'



शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि लखनऊ विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश अपनी स्थापना के 100वें वर्ष में प्रवेश करने पर "शताब्दी वर्ष" का आयोजन कर रहा है।

किसी भी संस्था के लिए, विशेषकर शैक्षणिक संस्था के लिए, 100 वर्षों की यात्रा की समयावधि इतिहास के झरोखे से गुजरना है। वर्ष 1920 में स्थापित लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय व वैश्विक स्तर पर अपने योगदान से राष्ट्र तथा विश्वविद्यालय के यश को उत्तरोत्तर प्रतिष्ठित किया है। मेरे संज्ञान में लाया गया है कि विश्वविद्यालय में लगभग 25000 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। शिक्षण एवं चरित्र निर्माण बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियों में एक बहुत बड़ी चुनौती है। यही कारण है कि भारत सरकार ने 34 वर्षों के उपरांत व्यापक विचार-विमर्श के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्माण किया। भारत सरकार और राज्य सरकारों का परम दायित्व है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत अक्षरशः कार्यान्वयन हो ताकि नए आत्मनिर्भर एवं विश्व ज्ञान गुरु भारत का निर्माण यथाशीघ्र हो।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा शताब्दी वर्ष को चित्रबद्ध तथा लिपिबद्ध करने के लिए "शताब्दी वर्ष 2020 – कॉफी टेबल बुक" का भी प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि कॉफी टेबल बुक में विश्वविद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक की प्रगति तथा उपलब्धियों के साथ ज्ञानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण लेखों का समावेश होगा।

मैं लखनऊ विश्वविद्यालय को शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कॉफी टेबल बुक प्रकाशन हेतु अपनी अग्रिम शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in



डॉ० दिनेश शर्मा



उप मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

99-100, विधान भवन,
लखनऊ

दिनांक: 22-10-2020

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि लखनऊ विश्वविद्यालय अपने शताब्दी वर्ष में एक **कॉफी टेबल बुक** का प्रकाशन करने जा रहा है। मेरे लिए यह और भी गौरव का विषय है क्योंकि मैंने इसी महान विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और उसके बाद मुझे यहीं अध्यापन करने का भी अवसर मिला। इस विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में जो शिक्षा संस्कार मुझे यहाँ से मिले उसने मेरे व्यक्तित्व निर्माण में महती भूमिका निभाई है।

कॉफी टेबल बुक के प्रकाशन के साथ विश्वविद्यालय अपने सौ वर्षों की इस गौरवशाली यात्रा का हिस्सा बनने का मौका उन सभी लोगों को मिलेगा, जो पूर्व में किसी न किसी रूप में इस विश्वविद्यालय का हिस्सा बने या अभी उसका हिस्सा है या फिर भविष्य में इसका हिस्सा बनेंगे।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि कॉफी टेबल बुक में विश्वविद्यालय की चित्रमय प्रस्तुति आने वाले वर्षों में विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रेरित ही नहीं करेगी बल्कि उन्हें इस बात का भान भी करायेगी कि वे एक ऐसे महान विश्वविद्यालय का हिस्सा हैं, जिसका शानदार सौ वर्षों का इतिहास है।

मैं इस कॉफी टेबल बुक के सफल प्रकाशन के लिए कुलपति प्रो० आलोक कुमार राय और प्रकाशन टीम से जुड़े सभी सदस्यों को अपनी शुभकामना देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी लखनऊ विश्वविद्यालय अपने पठन-पाठन से सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करेगा।

(डॉ० दिनेश शर्मा)

प्रो० आलोक कुमार राय जी,
कुलपति,
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ।



शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। इस उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय शताब्दी वर्ष उत्सव का आयोजन करने जा रहा है। शताब्दी वर्ष उत्सव का आयोजन करना किसी भी संस्था के लिए बहुत गौरव की बात है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय अपने शताब्दी वर्ष उत्सव को अविस्मरणीय बनाने के लिए चित्रबद्ध तथा लिपिबद्ध कर "शताब्दी वर्ष 2020-काफी टेबल बुक" का प्रकाशन भी कर रहा है जिसमें विश्वविद्यालय के अतीत, वर्तमान व भविष्य पर प्रकाश डालने हेतु विभिन्न आलेखों, ऐतिहासिक चिन्हों, महत्वपूर्ण पत्रों व अभिलेखों का संकलन किया जायेगा।

मैं इस पुनीत अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो० आलोक कुमार राय, कुलसचिव, प्रबंधन के सदस्यों, अधिकारियों, कर्मचारियों, वर्तमान एवं पूर्व विद्यार्थियों, अभिभावकों और विश्वविद्यालय से जुड़े सभी लोगों को अपनी शुभकामनाएं देता हूँ, जिन्होंने इस संस्था की प्रगति एवं गुणवत्तापूर्वक शिक्षा प्रदान करने में अपना योगदान दिया है। मुझे विश्वास है कि लखनऊ विश्वविद्यालय उत्कृष्ट उच्च शिक्षा के उन्नयन हेतु निरंतर प्रयास करता रहेगा।

मैं शताब्दी वर्ष उत्सव के आयोजकों एवं प्रतिभागियों को बधाई देता हूँ और "शताब्दी वर्ष 2020-काफी टेबल बुक" के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

धीरेन्द्र पाल सिंह
(धीरेन्द्र पाल सिंह)

14 अक्टूबर, 2020

कुलपति की कलम से



आज से ग्यारह माह पूर्व जब मैंने इस विश्वविद्यालय के कुलपति पद का दायित्व ग्रहण किया तो मुझे यह अंदाज़ा नहीं था कि मैं एक ऐसे विश्वविद्यालय का हिस्सा बनने जा रहा हूँ जो एक पूरे शहर के साथ-साथ एक पूरी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात जब भी मैं इस महान विश्वविद्यालय की इमारतों से गुजरता तो मुझे लगता कि यह महज इमारतें नहीं, बल्कि एक कलाकृति है और इसकी अपनी एक अलग कहानी है। जो कभी मुझे शायरी में सुनाई पड़ती तो कभी किस्सों कहानियों में, पर सच में इस विश्वविद्यालय से गुजरना अपने आप में एक जीते जागते इतिहास से गुजरना है। जिसकी नींव पर इस प्रदेश व देश के लाखों विद्यार्थियों का भविष्य टिका है।

संयोग से मुझे ऐसे समय में इस विश्वविद्यालय की सेवा करने का अवसर मिला जब यह अपने जन्म की शताब्दी मनाने जा रहा है। यह मेरे लिए एक अवसर था जब इस विश्वविद्यालय की कहानियों को एक नए नजरिये से उन सभी को चित्रों के माध्यम से दिखाया जाए जो कभी इस पवित्र जगह का हिस्सा रहे या हिस्सा हैं। सौ साल किसी भी संस्था के लिए कम नहीं होते। लखनऊ विश्वविद्यालय पिछले सौ सालों में न सिर्फ टिका रहा बल्कि अपने विद्यार्थियों और शिक्षकों के माध्यम से हमारे आने वाले कल को बेहतर भी करता रहा है। इतिहास का सबक जाने बगैर भविष्य की सुनहरी बुनियाद नहीं रखी जा सकती, आज भी जब गुजरे वक्त में यहाँ से पढ़ा कोई विद्यार्थी झाँकता है तो अपनी जिन्दगी के बीते हसीं पलों का एक बड़ा हिस्सा लखनऊ विश्वविद्यालय के गलियारों में ही पाता है। वो चाहे मिल्कबार कैंटीन में दोस्तों के साथ लगे कहकहे हों या फिर जब जीवन में पहली बार मंच पर चढ़ने का मिला मौका। उसे बहुत कुछ याद आता है, वो पीजी ब्लॉक के कमरे हों या टैगोर पुस्तकालय के सामने का लॉन जब किताबों से ऊबे तो सामने प्रकृति की गोद में जा बैठे। वो नहर जो साल के बारह महीने न बहती हो पर उसके किनारे बैठ कर न जाने कितने लोगों की तकदीर अपनी मंजिल तक पहुँच गयी। मालवीय हाल जहाँ याद दिलाता है कि हम किस महान परम्परा के वाहक हैं वहीं एपी सेन हाल कई सारी कलात्मक अभिरुचियों का गवाह बनता है। ये यादें जो विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हर व्यक्ति की साझा विरासत है पर ऐसा कोई जरिया किसी के पास नहीं था, जो आज की भागती दौड़ती दुनिया में हमें दो पल के लिए थाम ले, और उन बीते हुए लम्हों को एक साथ फिर से महसूस करने का मौका दे। एक ऐसा तरीका जिसमें सबकी यादें जो हैं तो भले ही वक्त के अलग-अलग हिस्से की पर उसमें इस विश्वविद्यालय का आंगन साझा है। जिसके बहाने जब कोई पीछे मुड़ के देखे तो उसके चेहरे पर जहाँ इस महान विरासत से जुड़े होने पर गर्व की अनुभूति हो, वहीं हृदय में एक संतुष्टि का अहसास।

ऐसे ही वक्त में मैंने यह फैसला किया कि विश्वविद्यालय की इस गौरवशाली विरासत को जितना भी सहेजा जा सकता है उसे सहेजा जाए और विश्वविद्यालय एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन करे। वक्त तो बीत जाएगा पर अपने कदमों का निशान पीछे छोड़ जाएगा। हमारे पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। सौ साल के बहाने ही सही अब वक्त है जिसे दुनिया को बताया जाए कि कैसे कोई विश्वविद्यालय "लखनऊ विश्वविद्यालय" बन जाता है। इस कॉफी टेबल बुक के प्रकाशन का जिम्मा विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग को दिया गया।

इसी बीच कोरोना महामारी ने पूरे देश को अपनी गिरफ्त में ले लिया। लेकिन इस कॉफी टेबल बुक के प्रकाशन से जुड़ा हुआ समस्त काम चलता रहा जिसका नतीजा है कि ये कॉफी टेबल बुक अब आपके हाथों में है। इसमें प्रकाशित चित्र महज चित्र नहीं बल्कि हमारी धरोहर और विरासत है जो हम सबको एक शिक्षक और विद्यार्थी के रूप में हमारी जिम्मेदारी का एहसास कराने के साथ साथ गर्व भी कराते हैं कि हम किस महान परम्परा के वाहक हैं।

आलोक कुमार राय

(प्रो. आलोक कुमार राय)

From the Editors' Desk



Five decades. Fifty years. Half a century. That is the aggregate amount of time that two of us have been associated with the University of Lucknow. The world of higher education was introduced to us here. We grew up into hopefully responsible citizens here. And as fate may have it we both started and continue to grow our careers here.

The association we have with this institution, University of Lucknow is not just of our alma mater, it is of our identities, it is of our soul, it is of who we are. University of Lucknow has been forged into our very identities and it is difficult for either of us two to imagine not being associated with it.

Through these combined 50 years we have entered scared,

gained confidence and now are at complete ease with our places in this university and the university's place within us. So complacent about its existence that sometimes, its very existence is taken for granted or even forgotten. The foundation of our academic being so taken for granted, while we have concentrated on the many lofty castles that we have built or dream of building.

And then came the announcement! The centennial year of the University of Lucknow! The wake up call! Suddenly the enormity, the vastness of the university struck us, yet again. A conscious reevaluation of the university's shaping role in our lives began. And it came to us, we had to do something. Something to show our gratitude to this institution. Something to mark the occasion. Something that celebrated this shaper of so many lives. Something that was grand. Something that was pure passion, pure celebration, pure gratitude for the institution that made us.

As we pondered over a fitting tribute, we wandered around with new eyes, seeking, searching. And then it hit us! We could not isolate, dissect, separate the university and its myriad aspects. Each nook, each cranny, each pillar, each dome, each lawn, the imposing wooden staircases, the class rooms with the century old wooden beams, the high vaulted classrooms, the domineering Tagore library, the rundown canteens, each part of this university reverberates with meaning and memories for us. As we are quite sure it does for the millions that have walked in its shadows.

And that is what we would do! Celebrate the completeness, the uniqueness of this 100 year old mammoth institution! We would not go into words because, words would always fall short, would always be meager. We would show it through our eyes, our eyes that have evolved from that of a naïve green student to a middle aged academician.

As we again put on the spectacles of a naïve green student, that we were many decades ago, we were once again struck by the magnificence of the university. Its imposing princely romantic structures, its subtly lit domes, the stunning Lal Baradari in a sea of cream and green, the bisecting water canal, that the students so lovingly call the Ghagra, the arching bridge, that reminded us of DDLJ, the pristine white Tagore library with its imposing columns, the fine arts buildings, the heart shaped law faculty (visible only from air) and so much. Oh my where to look, where not to look!

Once the imposing structures began to subside in our minds, and we felt more at ease as we moved up the student ladder, the classrooms, the labs, the lawns, the canteens, our secret places where we vanished from class, the multitude of activities that we

could, do... Dance, Sing, Act, Play, Read. There was so much to do, and learn. Not only academics but so much more. And it gave us such joy. Such memories. Memories that will last a lifetime.

And then we revisited our present. The latest technologies that we have, the labs that we continuously strive to upgrade, the administrative block, the meetings, the responsibilities, the workshops, the organization.

There were so many perspectives, so many views and so we decided to take them all and compile them in one place. In a coffee table book. A pictorial celebration of the university from so many eyes. A visual ode to the *joie de vivre* that this university inspires in all of us.

Our cameras were ready, our vision sharpened and rejuvenated and off we set out to explore the university and its gems anew. The thumb grew weary clicking, our necks grew achy swivelling and the memory cards filled with great speed. There was just too much to see and behold and treasure. And now we were faced with a new challenge! What to keep, what to leave? What would make everyone delighted, reduce frayed nerves and tempers and present the world a tempting glimpse of all that the university has to offer. We had indeed opened Pandora's box!

For hours on end we argued about what would look good, what would not. Many times inspiration struck at the same time and there was joy. Other times left us exasperated with each other. As editors, it was our vision to present a portrait of the university in which each frame was someone's, each frame felt owned by one or another. Keeping the balance was thus the most difficult task that we had. The balance that portrayed the tightrope walk, the history, the successes, the failure & that the university had attained as it transitioned 100 years. A road that has taken it from the last century to this exciting new one. A transition from the chalk and black board of yore to interactive boards and hybrid classroom of today.

In this mad flight of fantasy that we planned, we were equally passionately supported by Vice Chancellor Prof. Alok K Rai, who recognized the craziness in our vision and supported it with great fervor. He gave us a free hand to achieve our vision, to get our team together and to let us dream and click! Every idea of ours was appreciated, encouraged and supported endlessly. What was best was that he shared with us the very same creative outlook!

The team that we put together was as big a dreamer and high achiever as we were. Waking up early to staying up late, venturing into dust and moisture laden nooks and crannies, craning their torsos for just one more shot! The layout was worked over and over again, moving millimeters towards perfection.

Other than the team, there were so many others who opened doors, provided perspectives and went out of the way to help us and facilitate this venture. The first person to be acknowledged is Ajay Kumar, an alumnus as well a budding talented photographer. He started the journey with us and took some

stunning photographs that are part of the book, but unfortunately due to some personal problems he had to leave the journey early on. Prof. Dinesh Kumar (Proctor), Prof. Poonam Tandon (DSW), Prof. A.M. Saxena (CoE) and Dr. Durgesh Srivastava (Director, IPPR & Superintendent of Works) along with their team always stood by us at all times of the day and night, opening doors and paving roads to make our lives so much easier. Prof. Kamal Kumar (Honorary Librarian, Tagore Library), Dr. Jyoti Misra (Deputy Librarian) and their entire team, went out of the way to facilitate the photoshoot of rare manuscripts and artefacts and entrusted us so willingly with these treasures. All Deans, Head of Departments and faculty were always ready and welcoming. Vice Chancellor Secretariat, Dr. Vinod Kumar Singh (Registrar) and Mr. Sanjay Srivastava (Finance Officer) along with their teams made our lives much easier. A special thanks to Prof. GN Verma, Mr. Jagdish Gandhi and Dr. Samir Sharma who dug into their own and in the case of latter his fathers' archival treasures to reveal previously unpublished photographic gems. Gratitude to Prof. R.P. Singh, Department of English & Modern European Languages for help with proof reading. A special thanks to Syed Kazim Ashgar Rizvi, Research Scholar, Department of Journalism & Mass Communication for his sustained efforts at the state archives to dig up gems of history on the university.

And here it is, our baby, the first ever coffee table book of University of Lucknow. Ready to be presented to the world. All we hope is that each picture of it will make you stop, brood, reminisce, smile, get teary and look back with nostalgia and forward with delight.

If it does, our work is done. It has been truly a labour of love and like all of those we are jittery over how it will be received. There is so much that has been done. There is so much that could be done (There is so much that Covid-19 walked over). We don't think 154 pages will ever be enough for this university. Maybe 10 more volumes and we would have been truly satisfied. But there is a time when the line has to be drawn. And this is it. 154 pages of sheer love for the beauty that this university is. Not only its outward appearances but its soul that has evolved and continues to do so. The dance of time in this university that we hope continues into a more glorious future.

And now the curtains rise and the stage is yours.


 (Geetanjali Mishra)


 (Mukul Srivastava)



Table of Contents

1. The Beginning	01
2. Memories	04
3. Architecture	16
4. Museums	36
5. Tagore Library	64
• Rare Manuscripts	70
• Rare Artefacts	77
6. Classes & Laboratories	82
7. Student Life	94
• Academics	96
• Cultural	100
• Sports	105
• Hostel	109
8. Teachers' Life	114
9. Amenities	122
10. The Journey goes on...	127
11. Vice Chancellors	132
12. Distinguished Alumni	133
13. A Few Dignitaries on Campus	134
14. Editorial Team	135

The Beginning



The second gate stands witness to the march of LU students with Nehruji against the arrival of Simon Commission in the city. The air of historical Bennett hall (now Malviya hall) and Arts quadrangle is permeated with the voices of the “greats” Bapu, Netaji Subhas Chandra Bose, and many others. Malviya Hall stands at the heart of the distinctive iconic building which forms the nucleus of university, the erstwhile Canning College.

Traveling further down from gate No. 3 is the heart of the university, the stunning and historical Lal Baradari. This rectangular building made up of red Lakhauri bricks supported by well-carved sandstone pillars and 12 doors with stucco relief, is an ochre gem in a sea of cream. Opposite to it stands proud the Paranjape Ground that has been a nurturing ground for sporting legends like hockey stalwart, KD Singh Babu and tennis sensation Mohd. Ghous, who was the first Indian to reach the quarter-finals of Wimbledon in 1939.

The fourth gate just ahead of it holds the symbols of communal harmony with a mazar, mandir, and a cemetery all at one place. Just adjacent to it stands Tagore library a witness of the great bond between LU and Tagore.

The beginning of the birth of University of Lucknow took place in the summer of 1862 when the first viceroy of British India, Charles John Canning drew his last breath in London. Around 4,500 miles away, a bunch of loyal taluqdars in Awadh decided to donate eight annas (half a rupee) from their annual income to start an academic institution in his memory.

Two years later, in 1864, Canning High School was born. It was a small school housed in two rooms of a haveli in the narrow lanes of Khayaliganj at Aminudaullah palace, with 200-odd students that formed the cradle, the very nucleus of what would 56 years later transform into the University of Lucknow.

Just two years later, in 1866, the high school was elevated to Canning College. In the early days, the college had no building of its own and had an almost peripatetic existence, shifting from one place to another, including Lal Baradari where Lalit Kala Academy is housed at present. It got a building of its own in Kaiserbagh (currently, Rai Umanath Bali Auditorium and Bhatkhandey Music Institute), but the growing demand for space prompted another relocation.

In 1878, Canning College finally found its permanent address in Badshah Bagh, Hasanganj. The foundation stone of the new building was laid by Sir John Lawrence on November 13, 1867, but it took around 11 years to be ready. The main building was

patterned in Indo-Saracenic style with high ceilings and wooden stairways. It was formally inaugurated by Sir George Couper, then lieutenant-governor of northwestern provinces and chief commissioner of Oudh on November 15, 1878. Canning College remained a recognized institution under Calcutta University for 20 years from 1867 till it came under the jurisdiction of Allahabad University in 1888.

The idea of starting a University at Lucknow was first mooted by Raja Sir Mohammad Ali Mohammad Khan, Khan Bahadur, K.C.I.E. of Mahmudabad, who contributed an article to the columns of "The Pioneer" urging the foundation of a university at Lucknow. Sir Harcourt Butler, K.C.S.I., K.C.I.E., was appointed Lieutenant-Governor of the United Provinces a little later, and his soft corner for all matters educational, made him an enthusiastic recipient and proponent of this idea. On November 10, 1919 the first meeting of eminent academicians and educationists was called by Sir Harcourt Butler, who put forth the idea of the University of Lucknow.

Like all good ideas, the idea was heartily supported and it was resolved that the University of Lucknow should be conceived as a Unitary, Teaching, and Residential University. This led to the University of Lucknow being the first residential university of the country, a model entirely different from that of all existing universities at that time, modeled on modern teaching universities in England.

Six sub-committees were handed the task of conceptualizing and refining the structure, principles, and ideals of the university. By 26 January 1920, the committees were ready to submit their recommendations after having met thrice. With minor amendments, the recommendations were heartily accepted. Such was the delight and enthusiasm at the setting up of the university that monetary donations flowed in with Rajas of Mahmudabad and Jahangirabad announcing their donations of one lakh each.

These recommendations after being tabled at a meeting of Allahabad University on March 12, 1920 were referred to a subcommittee that reported them to the senate. By August 17, 1920, the approval was granted by the Chancellor. The Draft bill which had been prepared in the meantime was introduced in the Legislative Council on August 12, 1920, and was passed in its amended form on October 8, 1920. Now known as the University of Lucknow Act, No. V of 1920, it received the assent of the Lieutenant-Governor on November 1 and of the Governor-General on November 25, 1920.

The Court of the University was constituted in March 1921, and the first meeting of the Court was held on March 21, 1921, at which the Chancellor presided. The other University authorities such as the Executive Council, the Academic Council, and the Faculties came into existence in August and September 1921. In March 1921, Canning College was merged with Isabella Thoburn College and King George's Medical College to form the university. On July 01,

1921, the University started teaching. The Canning College was handed over formally to the University on July 1, 1922.

Prof. GN Chakravarty, then pro-vice-chancellor of Banaras Hindu University (BHU), was made the first vice-chancellor of University of Lucknow on December 16, 1920. The academic session began in July 1921 and the first convocation was held in October 1922.

The school that was upgraded to a university within fifty six years of its existence, could only become possible through 'crowdfunding' with a mere initial eight anna voluntary deduction from the annual income of the Taluqdars and generous donations by the general public. Such was the enthusiasm that Taluqdars contributed land, personal bonds, and pooled money. Even war bonds were also donated to realize the dream of having a university in Lucknow. The minutes of the first meeting of LUs' court reveals how the university came into existence through crowdfunding, with funds received being acknowledged on paper.

Academic luminaries with world-class degrees were selected from the world over to grace the university and provide exceptional academic leadership. From the very beginning, the university decided to adopt an academic curriculum and approach that blended the old with the new, integrated old ideals and values with modern science and technology in a new exciting environment. The university also tried to resuscitate the old India ideal of bringing gurus into personal contact with students by appointing the faculty as *loco-parentesi* or moral tutors.

This personalized attention and exhilarating new approaches caused wide dispersal of the alumnus to new grounds, where they became founders of departments. This university has worked as the nurturing ground of numerous influencers in all spheres of life, academicians, scientists, administrators, artists, litterateurs, social workers and politicians. In its 100 years, lacs of students have marched to the beat of “Light and Learning”.

The university has dedicated itself time and again to academic excellence in its 100 past years. The coming century will differ vastly from the challenges of the previous one, but the university with its strong academic foundation and vision will continue to march gloriously into the next century, of this I am sure.*

(Mohita Tiwari)
 Author, Journalist & Alumna

*views expressed by the author are her own.



Memories

UNIVERSITY OF LUCKNOW

"Memories are the key not to the past, but to the future."-*Corrie Ten Boom*

The next few pages are fragments of memories from the 100 year old history of the university. Some official, some personal, each an indelible link to our roots.

Handwritten: 500 No. 541E

D.O.No. 813 / VC.

VICE-CHANCELLOR
LUCKNOW UNIVERSITY

LUCKNOW.

1st August, 1921.

My dear Jagdish,

I am going to take steps to form the various University bodies at as early a date as possible. Under clause 3(1) Class II(iv) of the first Statutes of the University His Excellency the Chancellor has to appoint four members to the Executive Council of the university. In an interview with His Excellency I made certain suggestions, and he directed my suggesting the following names for appointment:

- (1) Thekaur Sura) Baloch Singh, Taluadar of Asamanda, Vice-President of the British Indian Association.
- (2) Raja Saiyid Abu Jafar Saheb of Firozpur,
- (3) Saiyid Nabi-ullah Saheb, B.A., LL.B.
- (4) Babu Bisheshwar Nath Srivastava, B.A., LL.B.

I shall feel obliged by your kindly obtaining the orders of His Excellency and issuing the necessary notification.

I may add that the six members elected to the Executive Council by the Court of the University under clause 3(1) class II(i) are:

- (1) The Hon'ble Raja Sir Rampal Singh,
- (2) Lt. Sheikh Shahid Husain,
- (3) Pandit Gokaran Nath Misra,
- (4) Saiyid Wazir Hasan Saheb,

2.

(5) Mr. A. P. Sen,

(6) Shahebzada Dr. Saïd-uz-zafar Khan.

Yours sincerely,

G. K. Chakravarty

Kunwar Jagdish Prasad Saheb, O.B.E., I.C.S., M.L.S.,
Education Secretary to Government,
United Provinces, LUCKNOW.

P.S.--In case His Excellency considers it desirable to have some European gentlemen on the Executive Council, I would suggest the following names for His Excellency's consideration:

- (1) Mr. D. R. Lyle,
- (2) Mr. S. R. Daniels,
- (3) Mr. C. F. de la Fosse,
- (4) Mr. L. M. Jopling.

No. 1996-PMH/61

PRIME MINISTER'S HOUSE
NEW DELHI

October 10, 1961

Dear Shyam Lalji,

I have your letter of October 7. I gladly agree to the suggestion made in it and convey to you my acceptance of the membership of the Lucknow University Union which the Union was good enough to offer me.

Yours sincerely,

Jawahar Lal Nehru

Shri Shyam Lal Bajpai,
President, Lucknow University Union,
Lucknow.

A letter to the Education Secretary, Government of United Provinces, by the first Vice Chancellor, Prof. GK Chakravarty, regarding appointment of members to the Executive Council of the university.

Signed acceptance of the membership of the student union by Prime Minister Pandit Jawahar Lal Nehru. The Lucknow University Student Union was inaugurated in 1929 by Mahatma Gandhi himself.

Honble Sri Lal Bahadur Shastri,
Prime Minister of India.
We hereby request, to accept honorary membership of the union, as a humble token of our love and adoration to you Sir, and your services for the Motherland.

(A. V. Rao)
Patron

Gopal Bhatnagar
(Gopal Bhatnagar)
President

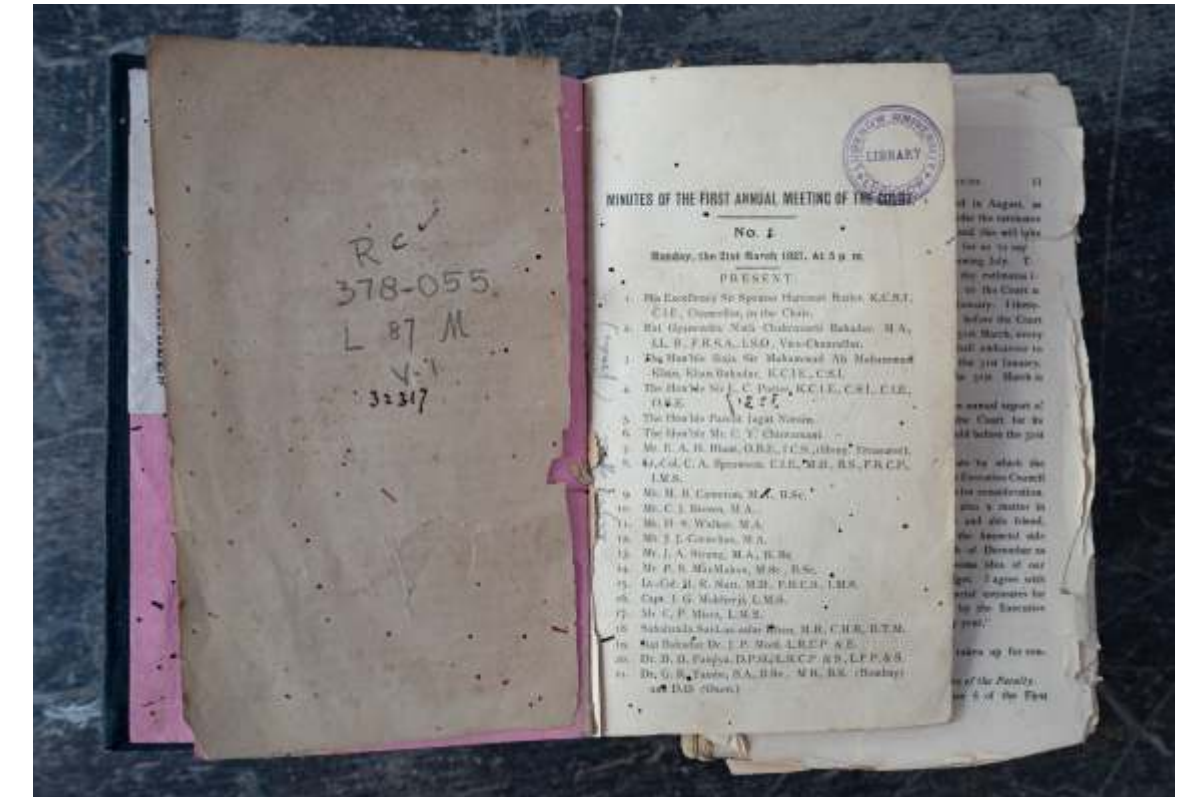
I accept the honorary membership of Lucknow University Union.

(Lal Bahadur Shastri)
The Prime Minister.

मैं सधन्यवाद सहित लखनऊ विश्वविद्यालय यूनिन की सम्मानित - विशेष सदस्यता स्वीकार करता हूँ।

(खान अब्दुल गफ्फार खान)

Signed acceptance of the membership of the student union by Prime Minister Shri Lal Bahadur Shastri (top left), Shri Khan Abdul Gaffar Khan (top right), Prime Minister Smt. Indira Gandhi (bottom left) and Shri Jai Prakash Narain (bottom right).



Top left and right: Minutes of the first annual meeting of the Court of University of Lucknow.

Bottom left and right: A History of American Literature. A four volume set, which was amongst the first possessions of Tagore library.

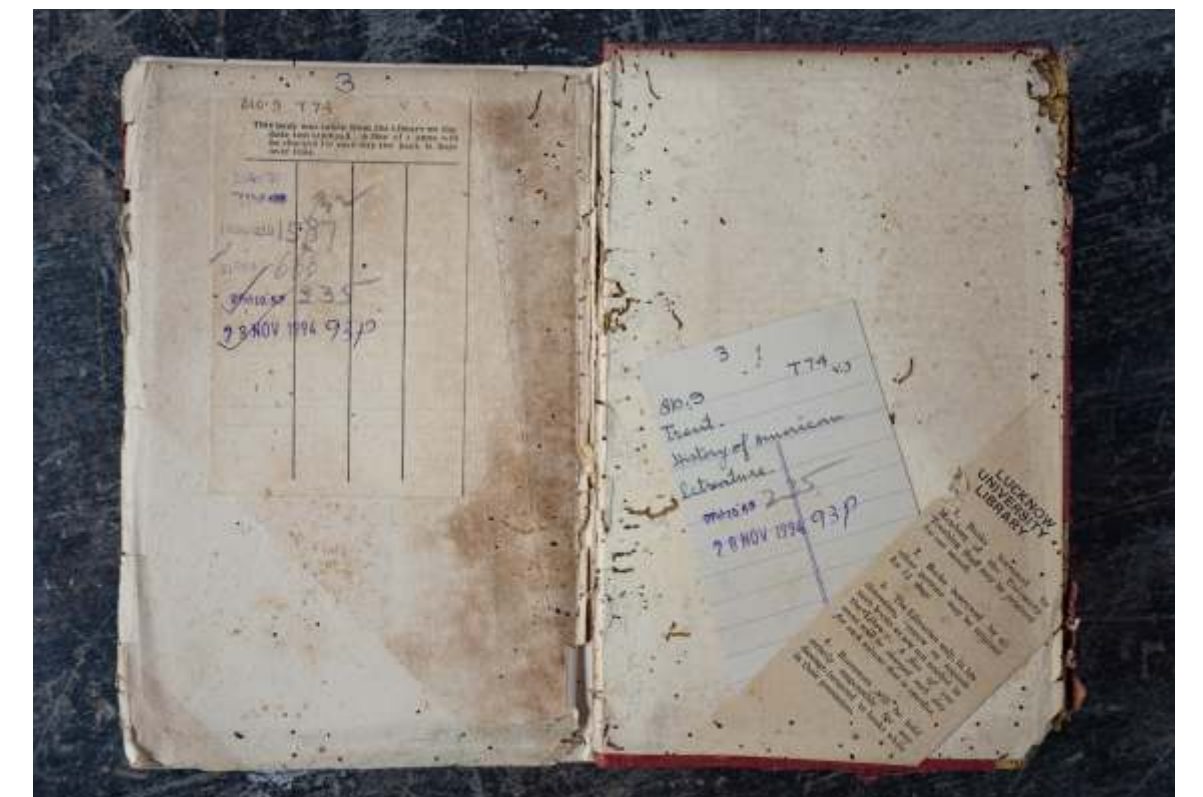
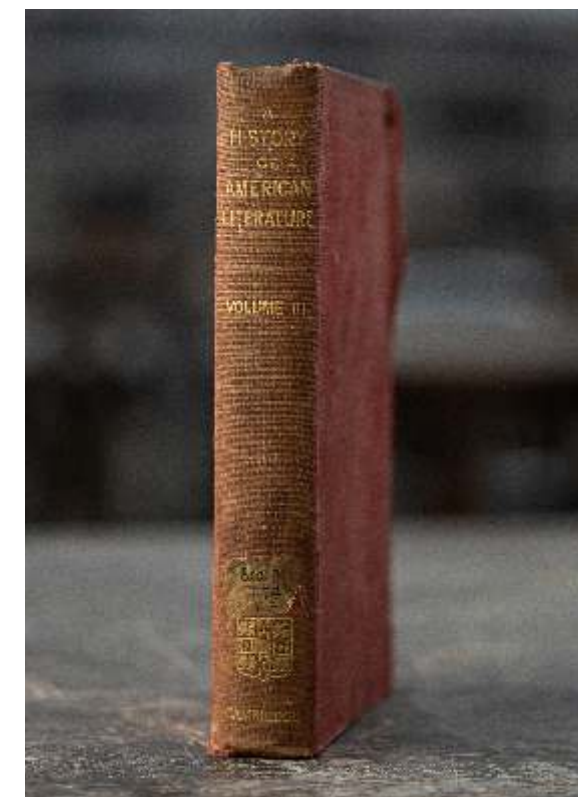
मैं अनुरोध स्वीकार कर लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र-संघ की सम्मानित सदस्यता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करती हूँ।

(ओम्पती इन्दिरा गांधी)

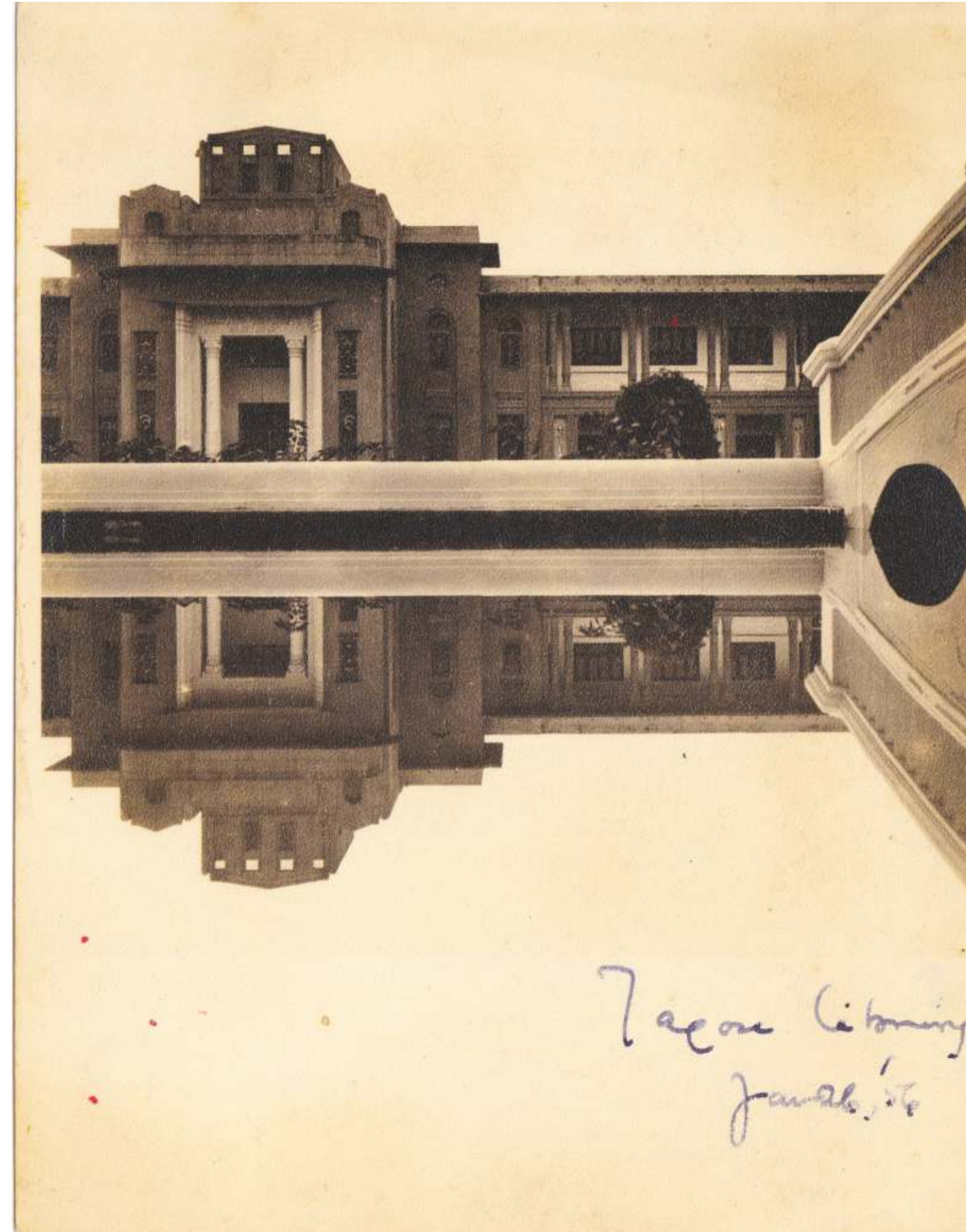
मैं अनुरोध स्वीकार कर लखनऊ विश्वविद्यालय छात्र संघ की सम्मानित सदस्यता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करता हूँ।

(जय प्रकाश नारायण)

२५ अगस्त १९६४ ई.



A stunning view of the Lal Baradari reflected in the still waters of the canal shot on January 23, 1956 by Prof. CP Sharma, Botany department.



An uninterrupted view of the Tagore Library and its mirror image shot on January 26, 1956 by Prof. CP Sharma, Botany department.

Left: An old library card of Tagore library from the 1930s.

Right: The first microscope, Z-01, of Zoology department, 1921.



Top and Middle: University celebrations of the war victory of 1971 of India over Pakistan. Picture credit: Prof. GN Verma, Zoology department.

Bottom: Prof. Norman Borlaug (Father of Green Revolution) along with Prof. SC Agarwal (middle) and Prof. C Chatterjee (extreme right) department of Botany. Prof. Borlaug visited the university in 1971, a year after winning the Nobel Peace Prize. Picture credit: Prof. CP Sharma, Botany department.



LUCKNOW UNIVERSITY UNION
 FANCY-DRESS CRICKET MATCH
 ALLIES vs. GERMANY
 DECEMBER, 1940.



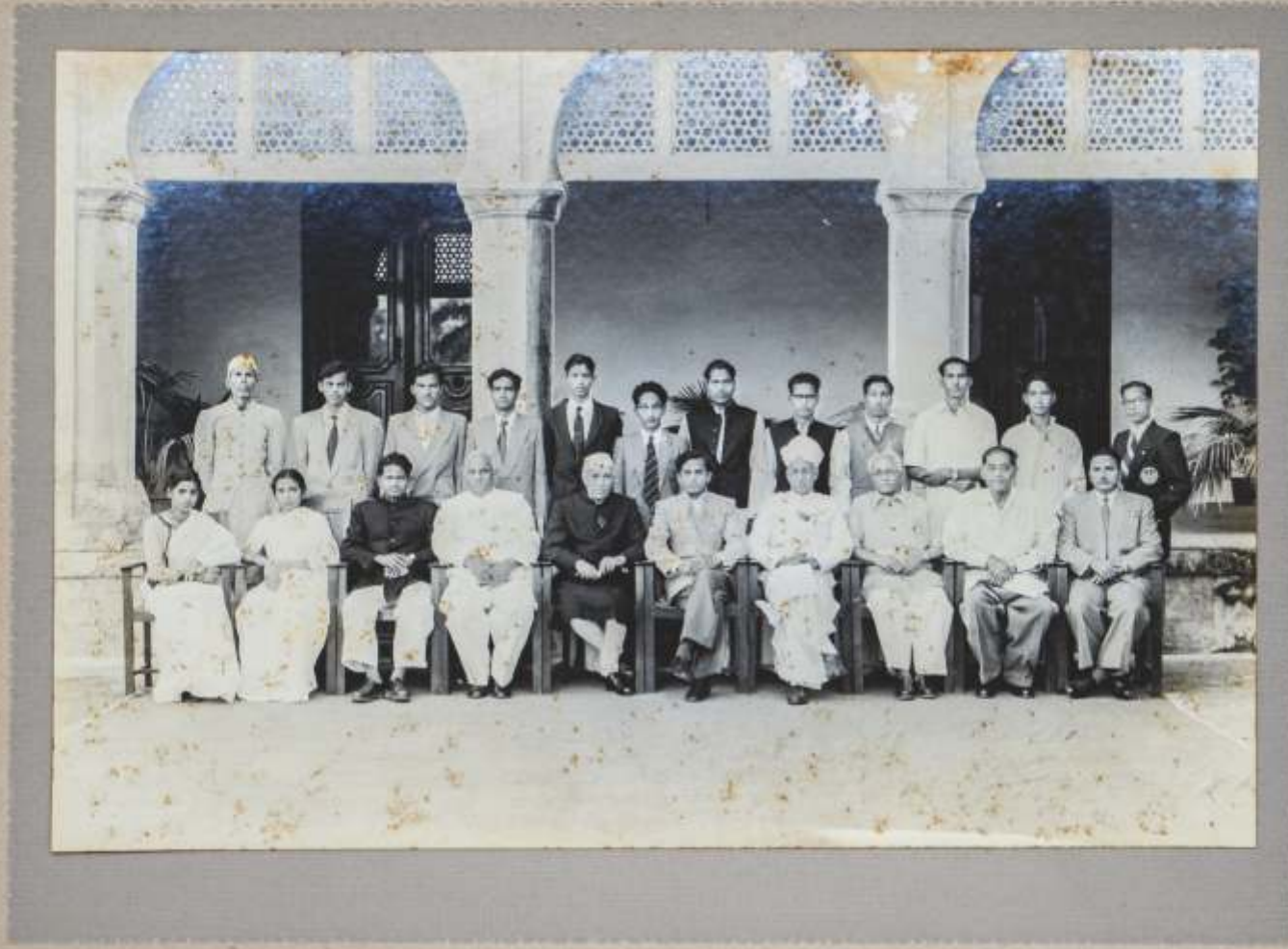
C. MULL & CO. LUCKNOW.

Sitting — Mr. Pasha (Newsh of Children), Mr. H. S. S. Thapar (Maharaja Kapurthala), Mr. Anwar Husain (Big Massolito), Mr. C. K. Srivastava (Prof. Hinder), Mr. K. B. Bhatnagar (M. India), Mr. S. C. Srivastava (Mahatma Gandhi), Mr. B. F. Nigam (N. Chamberlain), Mr. P. N. Chowdhry (M. Malomo), Mr. S. M. Ali Tabatabai (Maharaja Gwalior), Mr. Jogendra Singh Choudhary (Maharaja Patiala), Mr. Jagdishwar Prasad (Dr. J. P. Swarnam).

Standing 1st row — Mr. Husain Kasim Eidiwal, Mr. Sher Singh (Marshall Goring), Mr. S. S. Masaldan (Lord Gort), Mr. B. K. Gupta (Mahatma Bhambhani), Mr. V. P. Biju (Hon. Von Ribbentrop), Mr. Akbar Husain Bilgrami (Ferdin Jeechardal Nohra), Mr. Magan Bihari Srivastava, Mr. S. Mohd. Ali (Lord Halifax), Mr. K. E. Baghla, Mr. T. Bahadur.

2nd row — Mr. Teck Chand, Mr. S. M. Wahed, Mr. Mahesh Prasad, Mr. K. C. Saha (Lord Fray), Mr. M. H. Eiroo (Hale Saha), Mr. N. D. Bhattacharya (Winnon Churchill), Mr. Ch. Athar Hussain, Mr. Jas Gopal Seth (Joseph Beck), Mr. Raj Kumar Srivastava, Mr. Surej Narain Seneta (Lord Chatfield).

Group Photo of the Executive Committee, taken on the eve of the Inauguration of the
 LUCKNOW UNIVERSITY UNION
 BY
 Hon. Prime Minister Pt. JAWAHAR LAL NEHRU.
 ON THE 28TH OCT. 1957



C. MULL & CO. LUCKNOW.

Left to Right 1 — Mr. Bina Jaitly (Arts. Rep.), Km. Kanta Dixit (Council Rep.), Sarva Sri Ram Bahadur Singh (Secretary), Hon. Gov. Sri V. V. Giri Uttar Pradesh, Hon. Prime Minister Pt. Jawahar Lal Nehru, Vinay Chandra Mishra (President), Hon. Vice-President Dr. S. Radhakrishnan, Prof. K.A.S. Iyer (Vice-Chancellor), Dr. Nand Lal Chatterjee (Senior Lib.), K. M. Lal Nigam (Jr. Lib.).

Left to Right 2 — S/S Quilrat Humain (Head Clerk), Ram Kumar Srivastava (Arts Rep.), Shyam Lal Bajpai (Arts Rep.), Abid Siddiquis (Council Rep.), Kamshwar Swrup (Commerce Rep.), L. N. Sampat (Sc. Rep.), Chandra Mohan Mishra (Sc. Rep.), Ramrajy Mitra (Council Rep.), Prabhosh Chandra Srivastava (Council Rep.), Shro Pratap Singh (Law Rep.), Anil Kumar Saraswat (Council Rep.), Shyam Mohan Srivastava (Law Rep.).



Architecture

UNIVERSITY OF LUCKNOW

“A great building must begin with the immeasurable, must go through measurable means when it is being designed, and in the end must be unmeasured.” - *Louis Kahn*

In 1878, 90 acres of the extensive walled garden, “Badshah Bagh” on the north of river Gomti were allotted as the final resting place to the erstwhile Canning College, which later became University of Lucknow. This was originally a garden house of King Nasir-ud-din Haidar Shah, and, after the pacification of Avadh, the Lucknow residence of the Maharaja of Kapurthala. Of the old royal buildings of this garden, only the Lal Baradari, one lofty and magnificent gate, the Machli Dwar and one canal still stand.

After financial aid by Maharaja Sir Bhagwati Singh of Balrampur, in 1867 the implementation of a new building for housing Canning College started taking shape. The planing for the building was entrusted to a well-known architect. Sir Swinton Jacob, who prepared an impressive design in the Indo-Saracenic style. The prepared draft were considered by the experts to be so distinctive and elegant that they were subsequently sent for demonstration at the exhibition held in London on the occasion of the Festival of Empire in 1911. The building was completed in 1878. Currently, the University of Lucknow is spread over two campuses, main (148.78 acres) and second (70.23 acres), with total area of 219.01 acres.



*"Monuments are the grappling irons that bind one generation to another."
-Joseph Joubert*

A magnificent view of one of three wings of the imposing arts quadrangle taken across the Paranjape pavilion ground. This monument has seen 100 generations of students taking and handing over the baton successfully. 100 years of students, bound like beads on a string, each unique, each connected to the other.

“Builders, raise the ceiling high, raise the dome into the sky.” - *Sappho*

Three beautifully framed domes of Department of Chemistry against the azure blue sky. An angle rarely seen.





University Ahoy!

Set in the heart of the city, the stunning University of Lucknow can be seen from a new bird's eye view point, Lucknow Metro. With our very own metro station, Vishwavidyalaya, the metro makes commute to the university even more easy and exciting.



Bhaurao Deveras Dwar.

The first gate of the university named after an alumnus of the university, who while being accomplished academically also made his mark politically.

A bird eye (top) and a sweeping ground (bottom) view of the arts quadrangle of the university.

This quadrangle has stood witness to myriad events over 100 years. It has seen the freedom struggle, the dawn of independence and the sustained march of progress. The quadrangle stands tall and proud of its 100 year history as University of Lucknow and is the nurturing ground of many more to come.





A rarely seen perspective of the university. The historical Lal Baradari, arts quadrangle, lush greenery and the city in the back drop. Looking outside from the inside!



Aatmanirbhar Bharat.

A view of the university from the ONGC- Center of Advanced Studies (ONGC-CAS) building, covering most of Faculty of Science in the foreground and arts quadrangle in the background. While most of the buildings are at least 100 year old and house the founding departments of the university, their roofs are dotted with solar panels, the university's initiative to be responsible towards nature and to be "aatmanirbhar". Old and new, hand in hand.



"Statues to great men are made of the stones thrown at them in their lifetime." – *Jean Cocteau*

Top: Statue of Father of the Nation, Mahatma Gandhi, in mid stride in the Tagore lawns.



Bottom: Statue of Chatrapati Shivaji Maharaja, a famous Maratha king, and patriot facing the Shivaji stadium.



“There is no elevator to success,
you have to take the stairs.”
- Zig Ziglar

Burma teak wood stairs from
1878, that have borne the tread of
successes, failures, celebrations
and despairs.

Top: The imposing Lal Baradari made of Lakahuri bricks, with carved sandstone pillars and 12 doors, is placed in the heart of the main campus. It was the only red building of Nawabi era, and its foundation was laid by Nawab Ghaziuddin Haider Shah in 1814 and was completed by his son Nasir-ud-din Haider Shah in 1820.

Middle: Macchli Dwar. The oldest surviving gate of the then Badshah Bagh.

Bottom: The third remnant of history. The canal in between Machli Dwar and Lal Baradari.

The trifecta from the pages of history of Badshah Bagh.





“There are darkneses in life and there are lights, and you are one of the lights, the light of all lights.” - *Bram Stoker*

Lit up in myriad colours, the University of Lucknow at night. Literally and figuratively living up to its motto “Light and Learning”.



“May it be a light to you in dark places, when all other lights go out.” - *J.R.R. Tolkien*

The illuminated university showing the path of resilience, courage and big dreams through the century of its existence.



“Modern architecture is not a style, it's an attitude.” -*Marcel Breuer*

Much like a painted masterpiece, architecture is an art form that has the ability to delight, inspire, and transform. The interiors of ONGC-CAS; a transforming modern architecture in the midst of a university filled with traditional form.



“The desire for symmetry, for balance, for rhythm in form as well as in sound, is one of the most inveterate of human instincts.” - *Edith Wharton*

The symmetrical back windows of Tagore library. Off the beaten path.



Modern buildings of second campus of the university.

Top left: Faculty of Law

Bottom left: Lavanya Engineering Girls Hostel

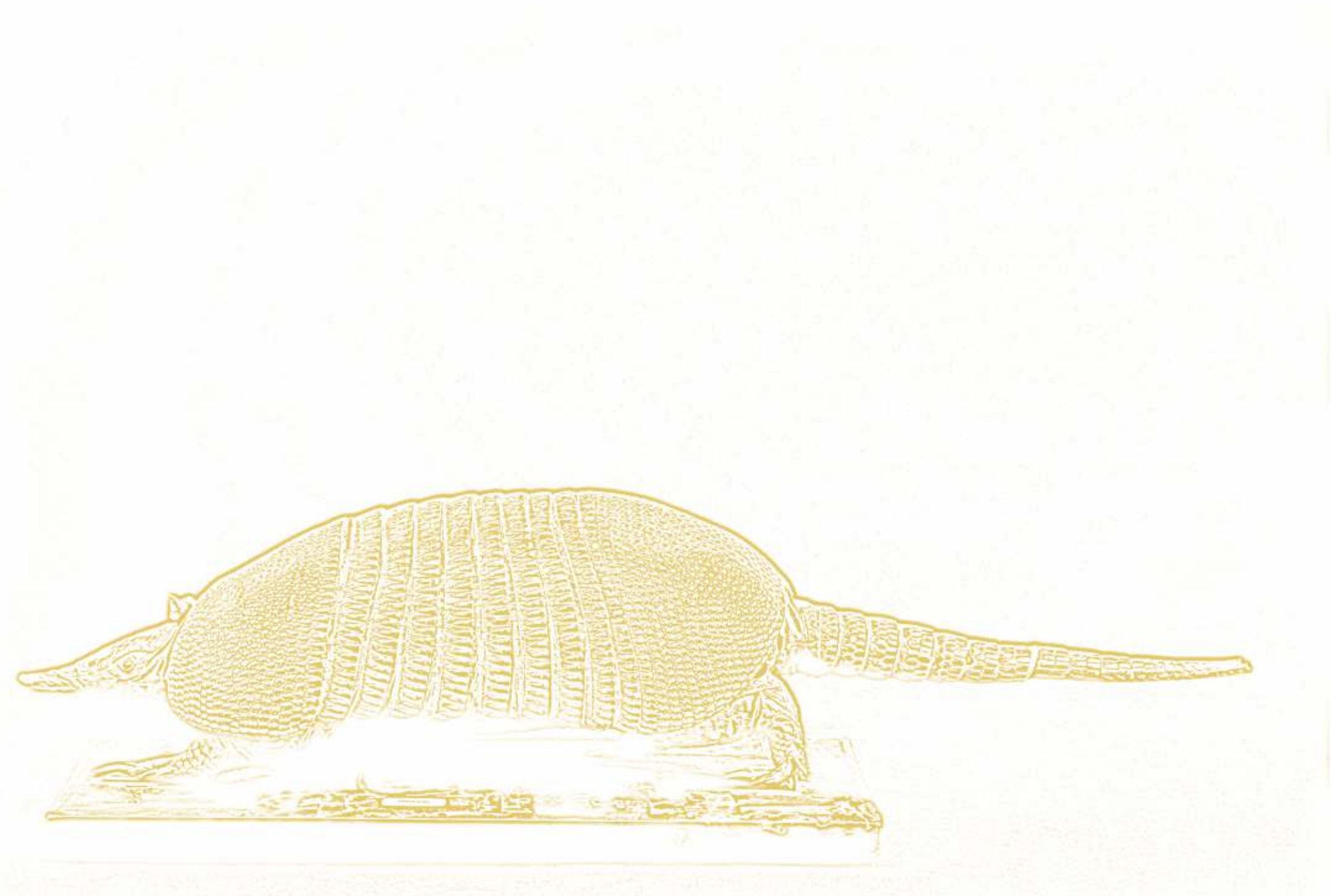
Top right: Homi Jehangir Bhabha Law Boys Hostel

Bottom right: Giri Lal Gupta Institute of Public Health, Dr. Shankar Dayal Sharma Institute of Democracy and Institute of Tourism Studies.

"The real voyage of discovery consists not in seeking new lands but in seeing with new eyes." – *Marcel Proust*

The staid Faculty of Engineering seen from an angle that makes it look like an architectural gem.





Museums

UNIVERSITY OF LUCKNOW

A point of time suspended for eternity, a tangible piece of the past. That is what museums are!

Museums are the life blood of our civilization for they give us an ever so vivid glimpse into what was. They are the physical connect to what has gone by, provide us the roots to our ever spreading knowledge and growth tree; keep us humble and tell us the tale of where we come from.

For academicians, museums make teaching easy and exciting. Things which students would perhaps not normally see in a lifetime, are there right in front, inspiring wonder. And that is why museums are proud possessions of any higher education institution. University of Lucknow is the proud owner of four museums, some dating back to the early 1920s, when the university itself was spreading its nascent wings, and others more recent. The following pages provide a brief photographic glimpse into these treasure troves of ours.



"To excavate is to open a book written in the language that the centuries have spoken into the earth"-*Spyridon Marinatos*

The Archaeological Museum at the Department of Ancient Indian History and Archaeology houses the voices captured in stone, metal and broken fragments. Each telling a tale, each a small broken but enduring piece of the past.

"The stone unhewn and cold becomes a living mould, the more the marble wastes, the more the statue grows." - *Michelangelo*

An architectural gem from a temple of the early medieval period at Kampil, Farrukhabad.



"The man molds the idol and then the idol molds the man" - *Adrian Rogers*

Head of Lord Ganesha, revered as the "Vighnaharta", the remover of all obstacles, from the early medieval period.



"Creation and destruction are the two ends of the same moment. And everything between the creation and the next destruction is the journey of life." - *Amish Tripathi*

Terracotta head of Lord Shiva, the destroyer, the third all powerful lord of the lord trilogy of Hinduism from the early Kushan period, 1st to 3rd century AD.



"I believe in God, only I spell it Nature" - *Frank Lloyd Wright*

Terracotta head of Naigamesha (2nd BC-3rd century AD), a goat or deer-headed deity, associated with fertility in both Jain as well as Hindu traditions.





“The essence of sculpture is for me the perception of space, the continuum of our existence.” - *Isamu Noguchi*

Male and female heads from the Kushan period, 1st to 3rd century AD.



“This devastation is a crossroads with a choice; to remain in the ashes or to forge ahead unburdened. Here is the chance to mold into a new nakedness, strengthened by the legacy of resilience to climb over the debris toward a different life.” - *Michele Harper*

Beautiful Harappan pottery circa 2500-2000 BC.



“Cultural differences should not separate us from each other, but rather cultural diversity brings a collective strength that can benefit all of humanity.” -Robert Alan.

A breathtaking integration of cultures, so vivid that the artefacts seem to whisper their stories into the very air, can be seen at the Prof. K.S. Mathur Anthropological Museum, Department of Anthropology.

"Now, therefore take, I pray thee, thy weapons, thy quiver and thy bow, and go out to the field, and take me some venison." – *Genesis 27:3, King James Bible*

Top: Spears and arrow heads from Naga tribes.

Middle: Cross bow and arrows, Andaman and Nicobar Islands.

Bottom: Fishing equipments from Majhi tribe from the state of Uttar Pradesh.



Deep in the interior, cut away from civilization, does not reduce the desire for beauty and the need for innovation.

Top: Slippers to bear the pebbles in the jungle paths made by Tharu tribe, UP

Middle: Bansthulla, a smoking pipe, from Garwhal UP.

Bottom: Uku, a container fashioned by the Onge tribe of Andaman and Nicobar designed to store an important currency, liquid gold, or as we know it the humble honey.



Leave a little sparkle wherever you go.

Tribal jewellery from coins made by Tharu tribe, Uttar Pradesh.



The beautiful swan was once an ugly duckling.

Just like the humble bottle gourd, which has been turned into a multipurpose domestic container of beauty (Tumbi) by the Chero and Panika communities at Dudhi, Uttar Pradesh.



Geology, the fathomless stores of by-gone time.

“The geologist takes up the history of the earth at the point where the archaeologist leaves it, and carries it further back into remote antiquity.”
- Bal Gangadhar Tilak

The Geology museum at the Department of Geology, holds pieces of history; history of origin of earth and all that lives in it. It tells stories of our past. The museum harbors gems, minerals, rocks and fossils.



"Trilobites survived for a total of three hundred million years, almost the whole duration of the Palaeozoic era: who are we johnny-come-latelies to label them as either 'primitive' or 'unsuccessful'? Men have so far survived half a per cent as long." -Richard Fortey

Trilobite fossil. A group of extinct marine arthropods. This fossil is about 530 million years old, almost a foot in length, amongst the largest in the world, from Morocco.



"There are fossils of seashells high in the Himalayas; what was and what is, are different things." -Rebecca Solnit

Ammonite fossil. Ammonites were free living cephalopods (molluscs) that lived from 419-66 million years ago. This particular ammonite is 90 million years of age.



"Where could the naturalist seek for more telling documents of the history of creation than in the fossils themselves?" -Ernst Friedrich

Fossilized for eternity, a Cretaceous fish fossil in lake deposit from Wyoming, USA, 50 million years old, a link to our past, the story of how we evolved.



"I would rather be a superb meteor, every atom of me in magnificent glow, than a sleepy and permanent planet." -Jack London

Top: A meteorite of Iron Nickel.

Bottom: Meteor with ultrafine-grained composition with glass.



"This desert rose, each of her veils, a secret promise." -*Sting*

Rose-like formations of crystal clusters of gypsum. Colloquially known as the desert rose. This particular mineral has been taken from Morocco.



"Rocks and minerals: the oldest storytellers." -*A.D. Posey*

Top: Amethyst, semiprecious mineral



Middle: Orpiment (orange) & Realgar (green), arsenic sulfide minerals



Bottom: Quartz crystal



What we cannot create, we curate!

Dr. S.C. Baugh Museum (*circa* 1925), Department of Zoology, hosts a collection of more than 1800 animal specimens. Animals from every continent find a place in this museum which is housed in a massive high ceiled room with Greco-Roman pillars.



"I've heard that hard work never killed anyone, but I say why take the chance?" - *Ronald Reagan*

Sloths (*Bradypus*) are one of the slowest moving animals on earth and they are absolutely at home hanging upside down for a lifetime from the trees in jungles of Central and South America.



"In animal kingdom, the rule is: the better parent you are, the more surely you won't be needed in the long run." - *Rachel Buchholz*

Didelphis, the opossum, native to America has an interesting parental care, where young ones cling to the tails of the females.



"I prefer living in colour!" - *David Hockney*

Scarlet macaw (*Ara macaw*). Large parrots, traditionally native to evergreen forests of Central and South America.

"Our wings serve as flippers that carry us across the ocean; not in the sky! Why, us penguins have so much fun time in the water, we don't even want to fly!" - *Jasmine Martin*

Emperor penguin (*Aptenodytes forsteri*), tallest and heaviest of all penguins, native to Antarctica.



"If we look straight and deep into a chimpanzee's eyes, an intelligent self-assured personality looks back at us. If they are animals, what must we be?" - Frans de Waal

Bonobo or the pygmy or dwarf chimpanzee (*Pan paniscus*) native to the Democratic Republic of Congo.

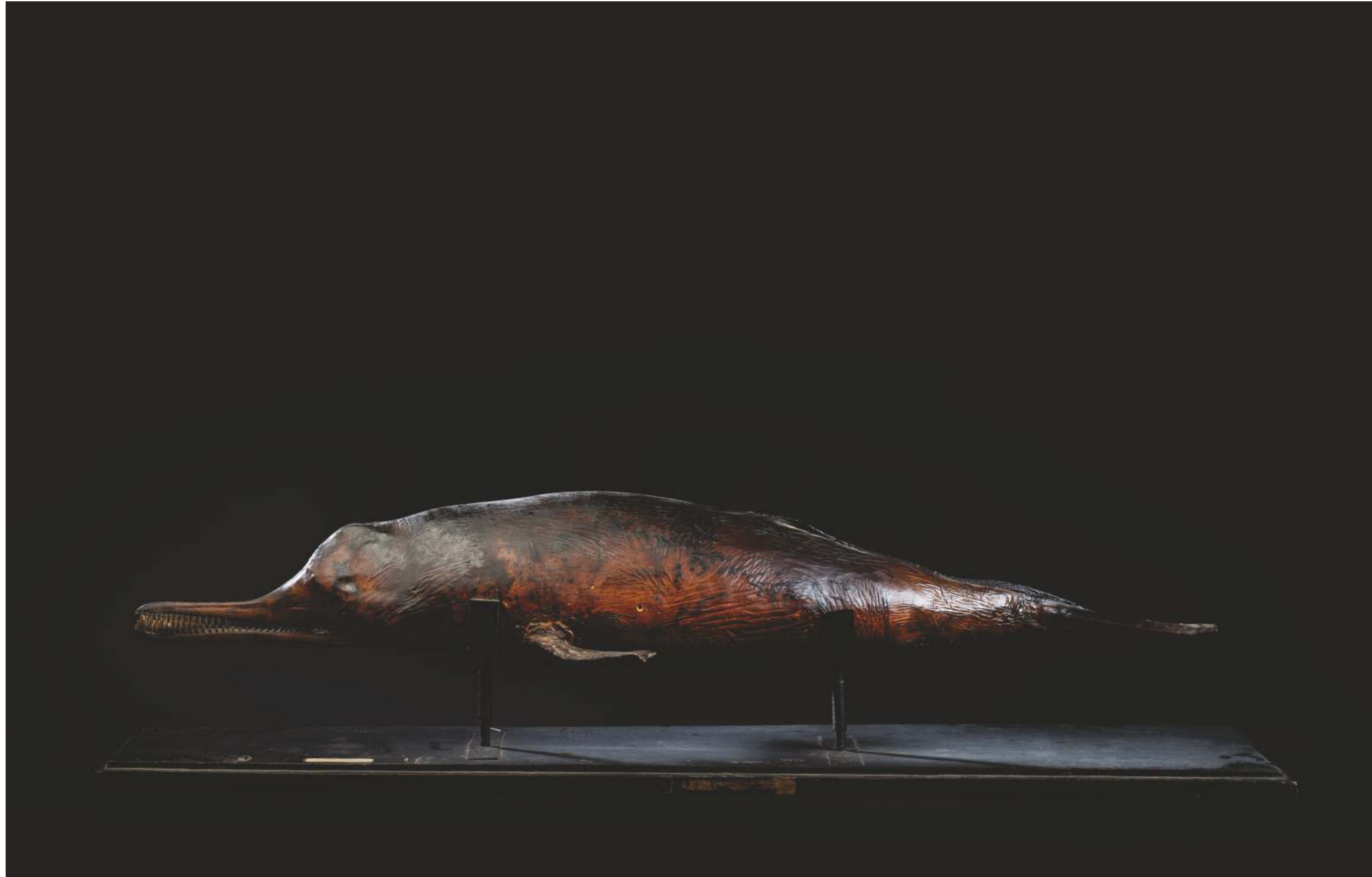


Long living worshippers of the Sun god, *Iguana tuberculata*, the green iguana, a much preferred exotic pet, native to Latin America.



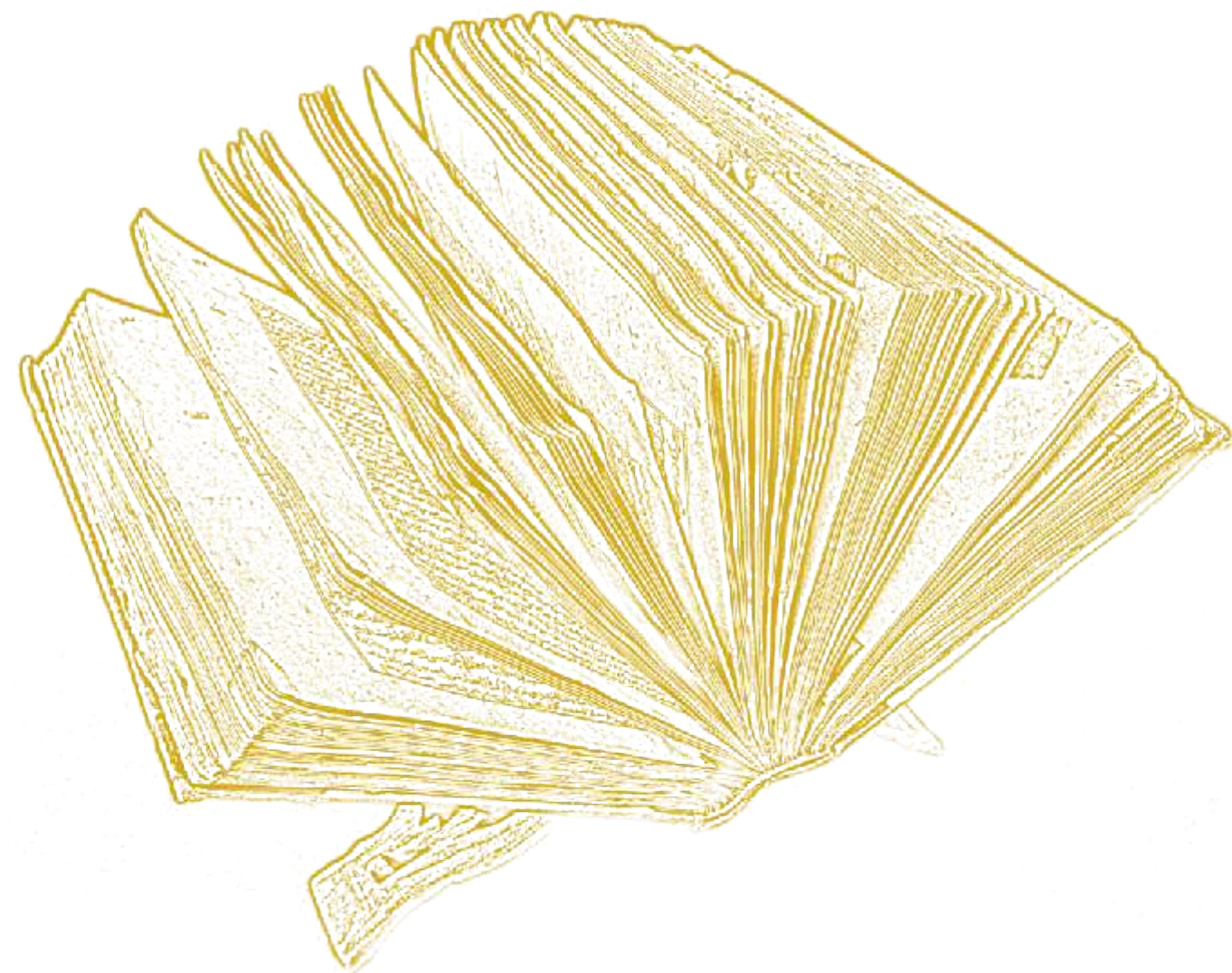
Like glass, I am fragile and beautiful. if you want. you can see right through me.

A lacy basket glass sponge made of silica spicules, *Regardrella okinoseana*, native to the seas around Japan.



"Cultures have long heard wisdom in non-human voices: Apollo, god of music, medicine and knowledge, came to Delphi in the form of a dolphin."
- Jay Griffiths

Gangetic Dolphin or the South Asian River Dolphin (*Platanista gangetica*), **National Aquatic Animal of India**, commonly found in the Ganga and Brahmaputra rivers and their tributaries.



Tagore Library

UNIVERSITY OF LUCKNOW

"I have always imagined that paradise will be a kind of a library."-*Jorge Luis Borges*

Tagore library forms the epicentre of the university. It was earlier known as the Lucknow University Library and was designed by noted Australian architect, Walter Burley Griffin fusing Indian and European styles of architecture. The foundation stone of the current building was laid in 1937, and was inaugurated in 1941 by the then Chancellor, Sir Manrice Hallet.

It was renamed after the Nobel Laureate Rabindranath Tagore who was a frequent visitor to the university, and had great affection for it.

Tagore library currently houses 555264 books and more than 2000 rare manuscripts and editions. This is in addition to a treasure trove of coins, manuscripts, sculptures and paintings.



“Whatever the cost of our libraries, the price is cheap compared to that of an ignorant nation.”-Walter Cronkite

This imposing edifice is the entrance to Tagore library. It is the lifeline of students in search of a peaceful nook to absorb the written words saturated with knowledge and wisdom.

“To build up a library is to create a life. It's never just a random collection of books.” – Carlos María Domínguez

An artistic view of one of hundreds of racks that line Tagore library.



Top: One of three reading halls of Tagore Library. A safe calm secluded place to fill oneself with the wonders that the world holds in the pages of books.

Bottom: The newly established cyber library houses 538 computers. This is designed to enable access of students and faculty to e-resources. In this year of Covid-19 pandemic, this setup has especially been a life saver for students and teachers alike.

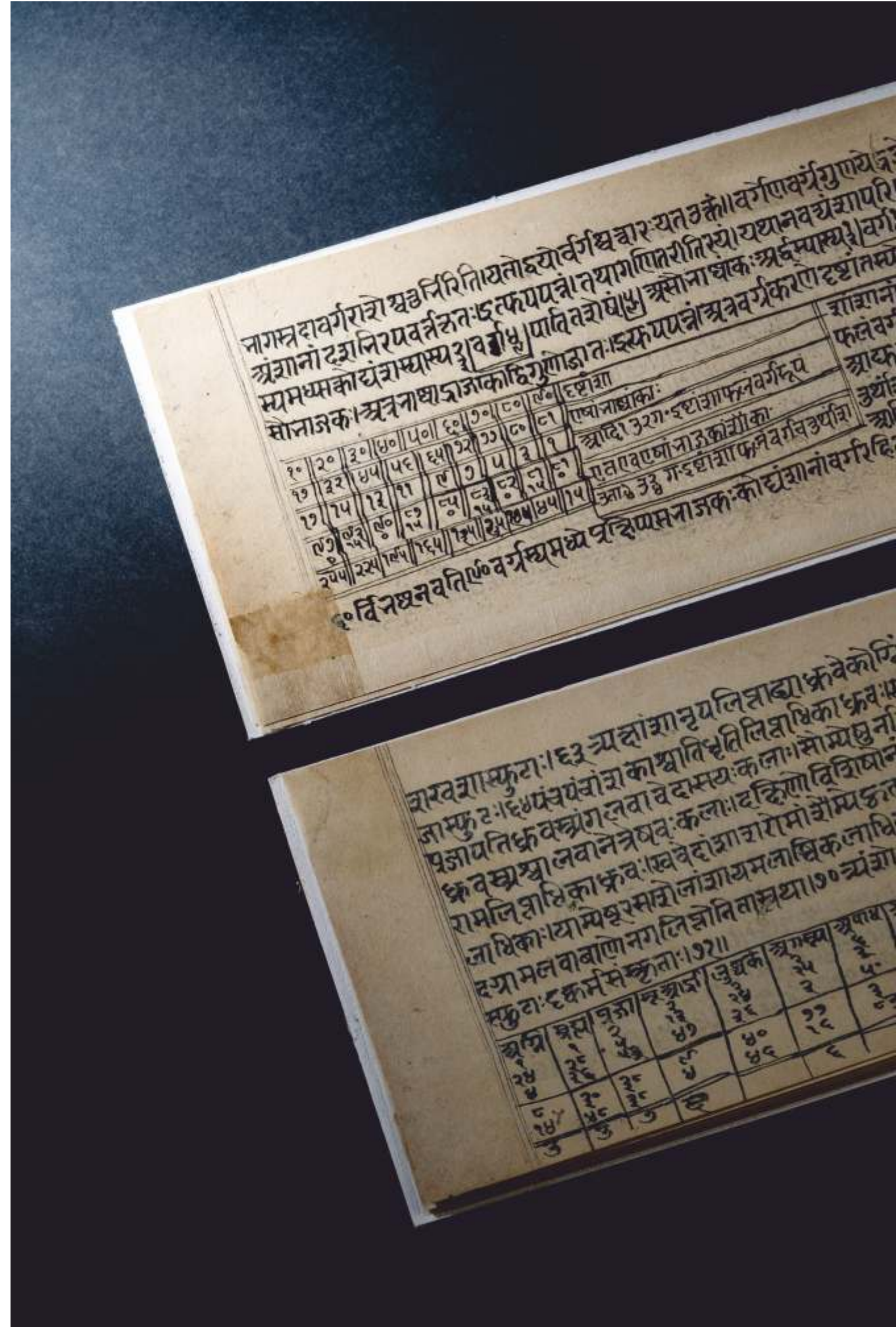




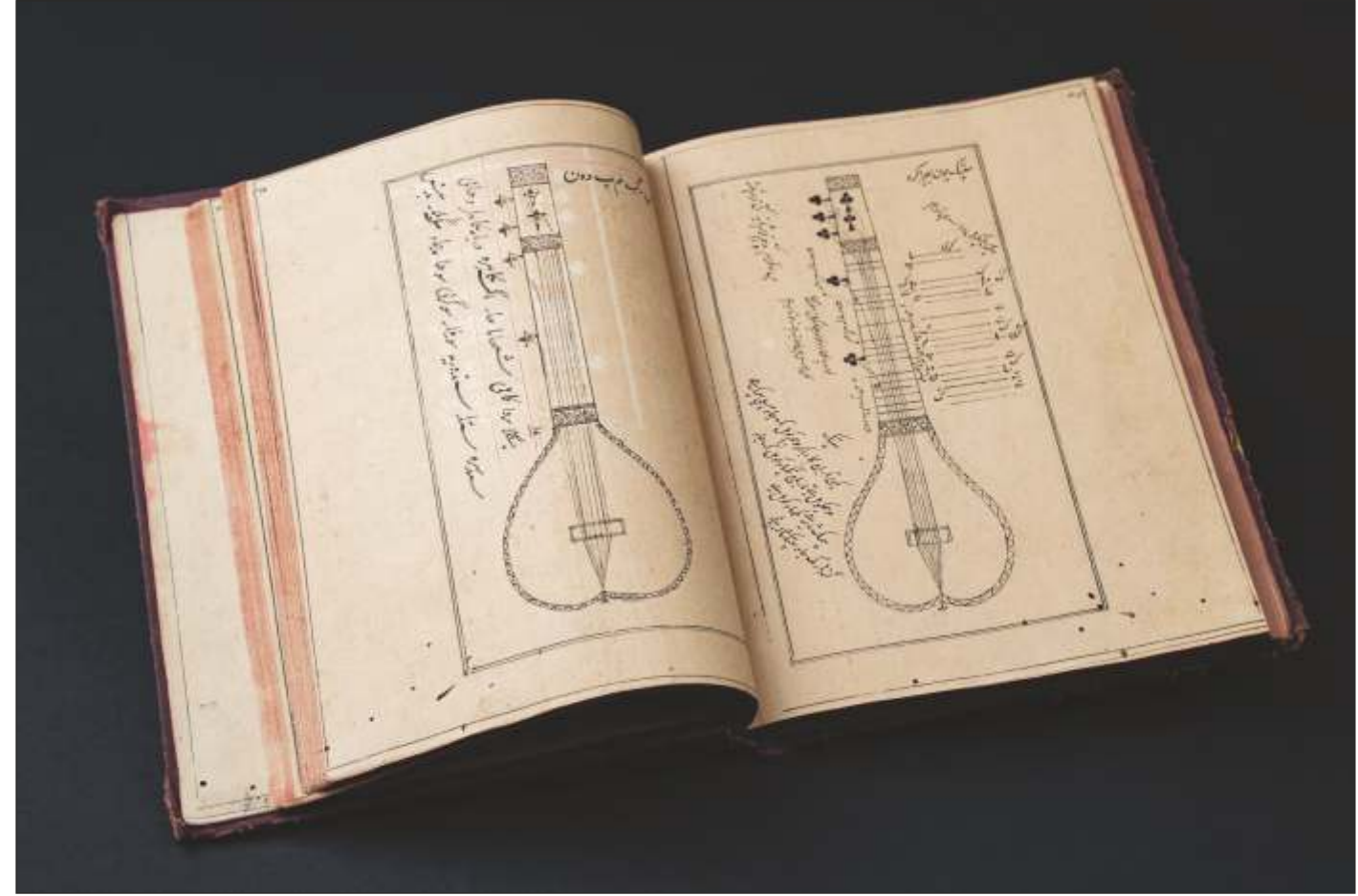
Immortal stories on mortal leaves.

- Top from above:
(1) Mahabharata in Pali
(2) Smriti Sar Samuchya by Paap Raj in Pali
(3) Acharya Champu by Tarkik Singh in Sanskrit

These manuscripts are made out of palm leaves in South Asia using dried and smoke treated palm leaves of the *Palmyra* palm. The text is inscribed with a knife pen. Colours are applied to the surface and wiped off, leaving the ink in the incised grooves.

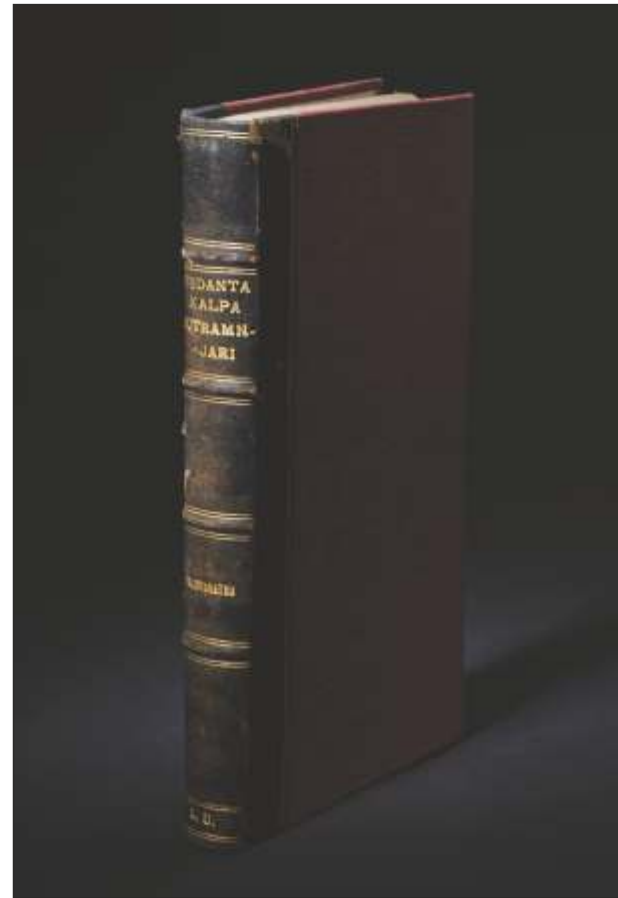
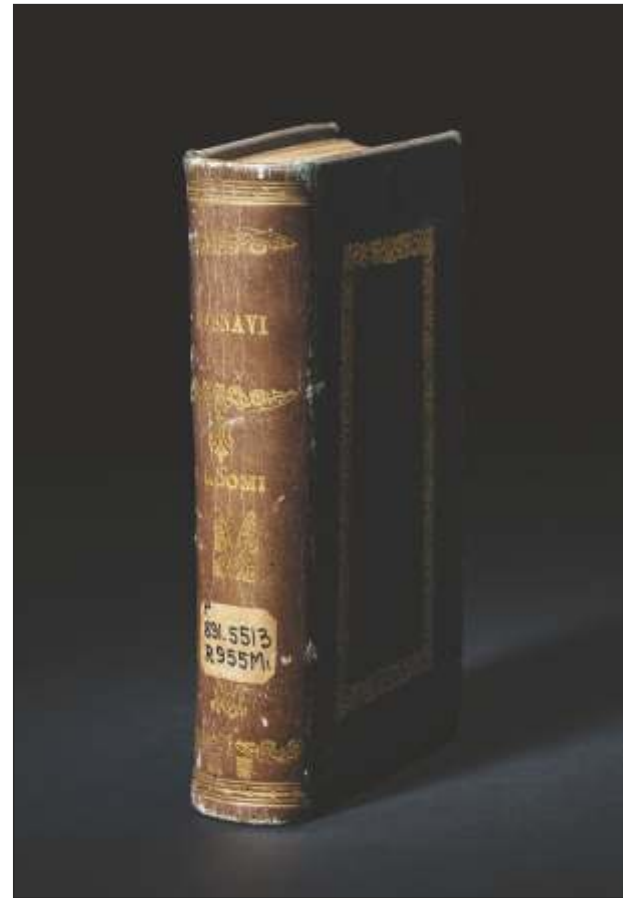


Yantra Kiranavali by Padmanabha (circa 1400). A handwritten manuscript of astronomy in the possession of Department of Mathematics & Astronomy.



Top: Sitar Nawazi by Raja Mirza Ghulam Murtaza circa 1838, describes the nitty-gritties of the sitar.

Bottom: Vedant Kalpa Sutra Manjari by Vednath Bhat circa 1780. The Kalpa Sutras include Vedic rituals, rites of passage rituals associated with major life events such as birth, wedding and death in family, as well as personal conduct and proper duties in the life of an individual.



Old texts at Tagore Library from left to right:

- (1) Masnavi-ye-Ma'navi by Rumi (Sufi text, *circa* 1273).
- (2) Vedant Kalpa Sutramanjari by Vedant Bhat (*circa* 1780).
- (3) Sikandarnama-e-bara by Nizami Ganjavi (*circa* 1194).

From left to right:

- (1) Deewan-e-Hafiz by Khwaja Hafiz Sheerazi (Sufi text, *circa* 1360).
- (2) Handwritten Yajurveda Samhita.
- (3) Shahnama by Firdausi (national epic of Iran, *circa* 992).



"It was a lavishly decorated medieval manuscript or something that looked like one. The first letters caught the light from the hallway and sparkled in gold. Strange birds and exotic animals hidden in a tangle of foliage and fairytale landscapes lined the borders."
-Lynne Ewing

Books that look like vivid paintings. Painstakingly hand written and coloured, these fonts of wisdom delight both the literary and artistic soul.

Top: Kulliyat-i-Sadi by Sadi Shirazi (circa 917 A.H.)

Bottom: Lahjat-i-Sikandari by Sikandar Lodhi (circa 1489-1517)

"The world of books is the most remarkable creation of man. Nothing else that he builds ever lasts. Monuments fall, nations perish, civilizations grow old and die out, and after an era, new races build others. But in the world of books are volumes that have seen this happen again and again and yet live on, still young, still as fresh as the day they were written, still telling men's hearts of the heart of men centuries dead."
-Clarence Day Jr.

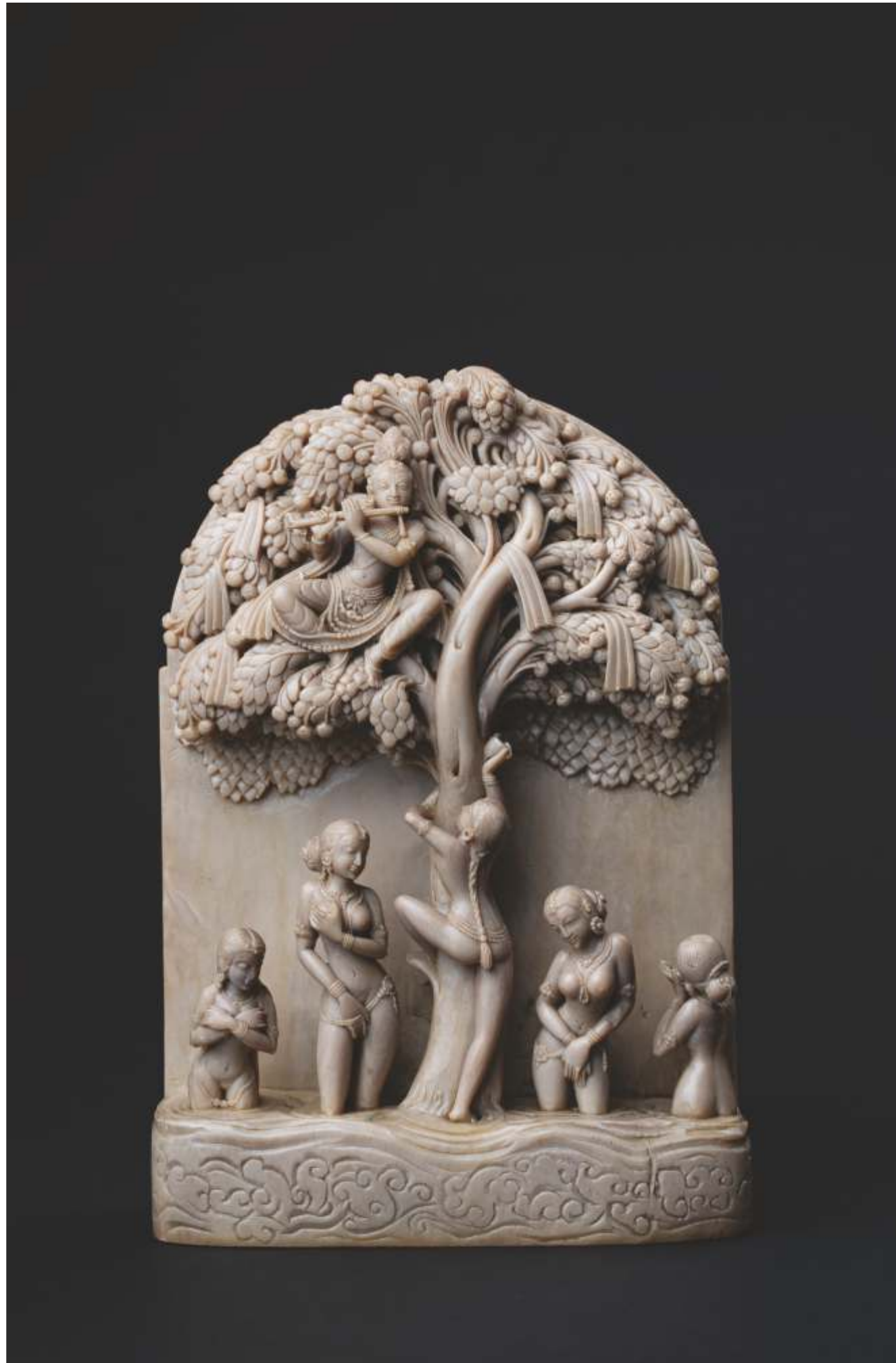
Top: Royal seal on a hand written Holy Quran (1239 AD).

Bottom: Sikandarnama-e-bara by Nizami Ganjavi (circa 1194).

Rare Artefacts

"The true work of art is but a shadow of the divine perfection." - *Michelangelo*

Immortalized in fine detail in stone the famous tale of Lord Krishna stealing the clothes of the gopis; provenance unknown.



"The more the marble wastes, the more the statue grows." - *Michelangelo*

A visiting card holder made of ivory with delicate carvings of the life of aristocrats etched out in it; provenance unknown, likely from South East Asia.



"Then marble, soften'd into life, grew warm." -Alexander Pope

Left: A stone vase with cherubic babies hewn into it; provenance unknown.

Right: A beautifully etched container with copper overtones and a stone base; provenance unknown.

Left: A ceramic vase with detailed East Asian life depicted in it; provenance unknown.

Right: A beautifully etched salt/pepper shaker shaped to look like an aristocrat of East Asian origins; provenance unknown.



Classes & Laboratories

UNIVERSITY OF LUCKNOW

“Children learn and remember at least as much from the context of the classroom as from the content of the course work.” - *Lawrence Kutner*

Classrooms and laboratories form the skeleton of any institution, the very template on which the learning tendrils begin to take hold. University of Lucknow boasts of well-equipped 383 classrooms and laboratories to run its 147 undergraduate, postgraduate and doctoral programmes. Some structurally old, dating 100 years, but still in action, some structurally new dating back just a couple of years; but both in service of the students we mould and grow.



“The laws of physics and chemistry must be the same in a crucible as in the larger laboratory of nature.” -*Alfred Harker*

100 year old training ground for undergraduate chemists at the Department of Chemistry.



“Measure what can be measured, and make measurable what cannot be measured.” -*Galileo Galilei*

Undergraduate laboratory at the Department of Physics.



"By the help of microscopes, there is nothing so small, as to escape our inquiry; hence there is a new visible world discovered to the understanding."-*Robert Hooke*

Undergraduate laboratory at the Department of Zoology.



"Learning another language is not only learning different words for the same things, but learning another way to think about things." - *Flora Lewis*

Language laboratory at the Department of Applied Sciences & Humanities, Faculty of Engineering & Technology.



“Scientists study the world as it is; engineers create the world that has never been.” -*Theodore von Karman*

Central workshop at the Faculty of Engineering & Technology, second campus. A place to build, a place to learn, a place to explore.



“The ideal engineer is a composite ... He is not a scientist, he is not a mathematician, he is not a sociologist or a writer; but he may use the knowledge and techniques of any or all of these disciplines in solving engineering problems.” -*Nathan W. Dougherty*

Electrical machine laboratory at the Faculty of Engineering & Technology, second campus.



“The main business of a lawyer is to take the romance, the mystery, the irony, the ambiguity out of everything [s]he touches.” - *Justice Antonin Scalia*

In these beautiful brick lined classrooms at the Faculty of Law, second campus, budding lawyers learn that the practice of law is reason, free from passion.



“I do not need any cheerleaders at my moot court. And I cannot imagine walking into that Court without the preparation of a few vicious moot courts; it is critical to the development of my thinking.” - *Patricia Millett*

Moot court at the Faculty of Law; where neonate lawyers, learn the ins and outs of their vocation. The faculty has been a regular winner at multiple national and international moot courts.



“Physics is really nothing more than a search for ultimate simplicity, but so far all we have is a kind of elegant messiness.” -Bill Bryson

The place where budding physicists break away from gravitational force and accelerate towards towering heights, the undergraduate lecture theatre at the Department of Physics.



Student Life

UNIVERSITY OF LUCKNOW

“We cannot always bend the world into the shapes we want but we can try, we can make a concerted and real and true effort. And you are privileged that, because of your education here, you have already been given many of the tools that you will need to try. Always just try. Because you never know. Minister to the world in a way that can change it. Minister radically in a real, active, practical, get your hands dirty way.”-Chimamanda Ngozi Adichie (*Wellesley commencement speech*)

With a total of 16447 students enrolled in the university, the campus is always a hub of activities that range from academic to extra curricular. The following pages are a glimpse into the myriad lives lived on the campus.



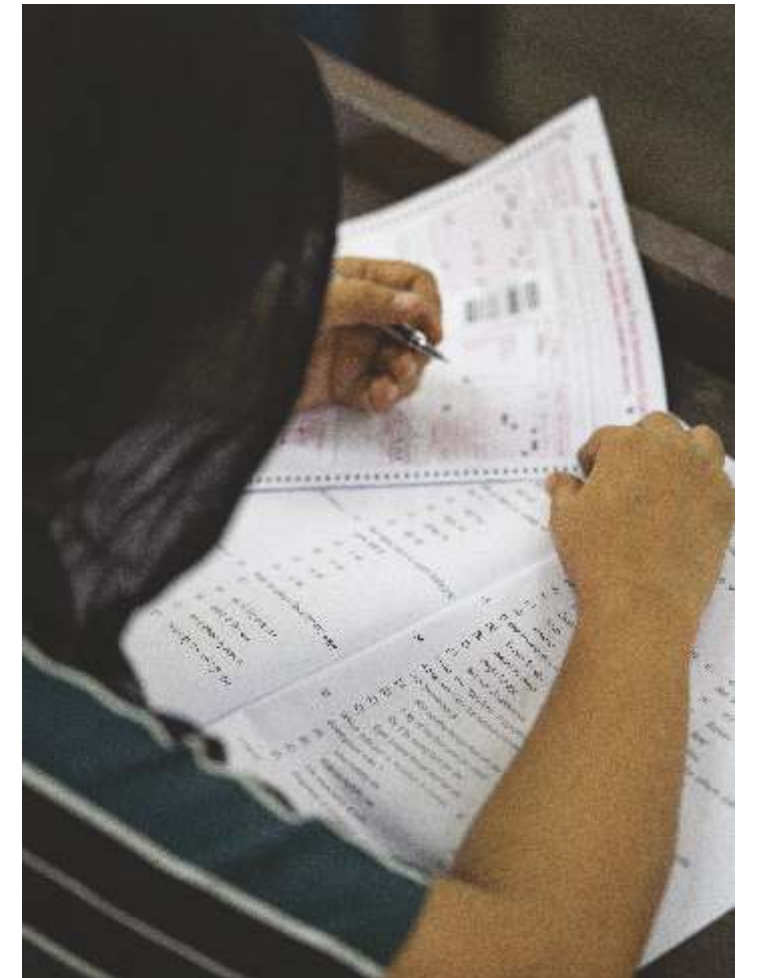
Academics

“University is like this little world, a bubble of time separate from everything before and everything after.” -*Mhairi McFarlane*.

The beat of the students footsteps, the low high octaves of their voices, the rustling of the pages, the throbbing laughter of their discoveries, the musical heartbeat of the University of Lucknow.

"*Sans laboratoires les savants sont des soldats sans armes*
(Without laboratories men of science are soldiers without arms)."- *Louis Pasteur*

The undergraduate laboratory at the Department of Zoology has borne the footfalls of students for the last 100 years.



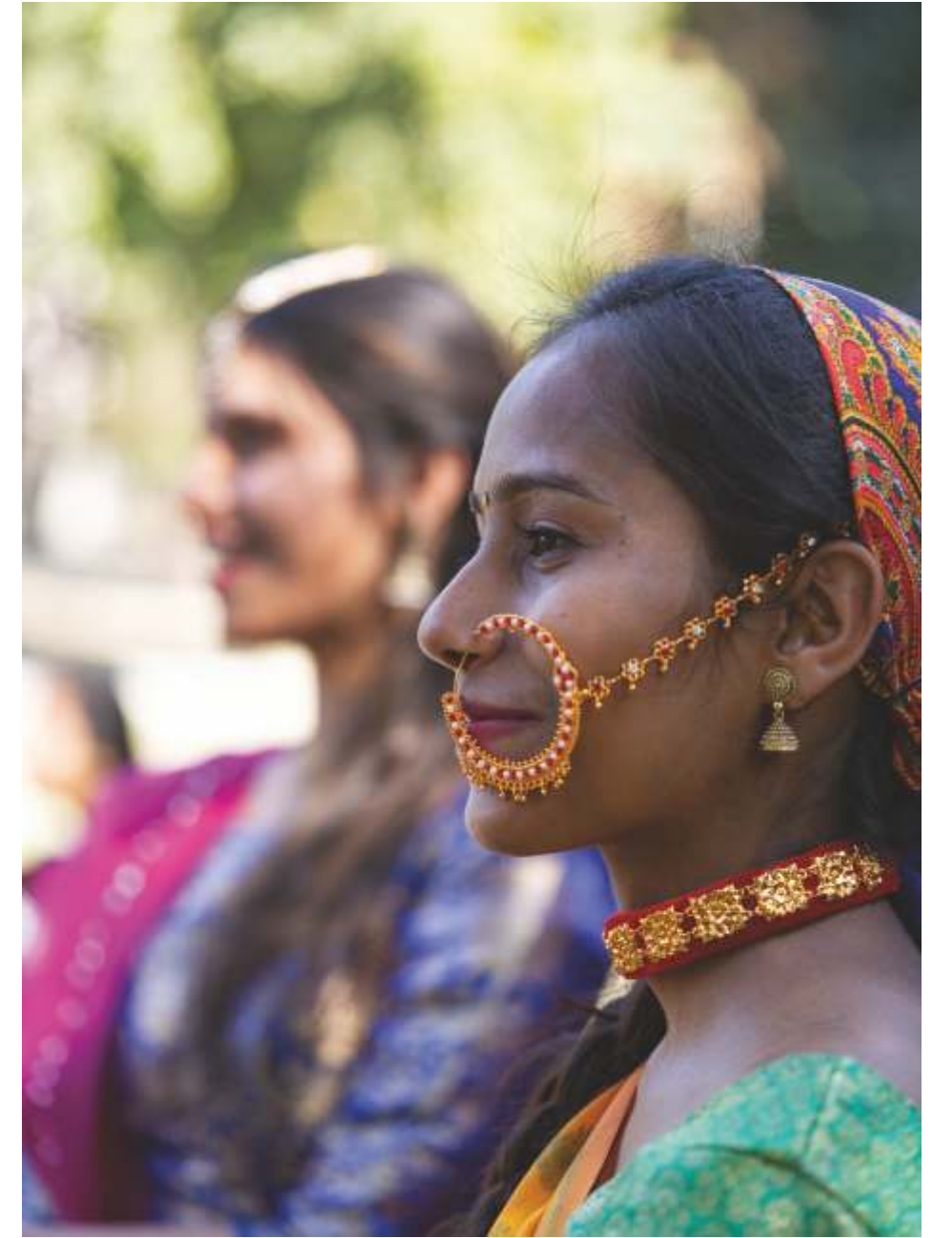
Students, our future of science, at work in undergraduate labs of Zoology and Botany (top left and right, respectively), consulting the library (bottom left) and giving a multiple choice examination (bottom right).



Cultural

"Music is a moral law. It gives soul to the universe, wings to the mind, flight to the imagination, and charm and gaiety to life and everything." -Plato

Malviya Hall packed to the brim with students and faculty swaying to the music.



"A society's competitive advantage will come not from how well its educational institutions teach the multiplication and periodic tables, but from how well they stimulate imagination and creativity." - *Albert Einstein*

Rangoli and singing competitions underway at the university.

"We dance for laughter, we dance for tears, we dance for madness, we dance for fears, we dance for hopes, we dance for screams, we are the dancers, we create the dreams." - *Albert Einstein*

Dance competitions underway at the university.



“Focus on the journey, not the destination. Joy is found not in finishing an activity but in doing it.” - Greg Anderson

Students engrossed in their art, their passion at the university.

“Each friend represents a world in us, a world possibly not born until they arrive, and it is only by this meeting that a new world is born.” - Anais Nin

University of Lucknow, the making ground of support systems that will last for a lifetime.

Sports



“Football is like life - it requires perseverance, self-denial, hard work, sacrifice, dedication and respect for authority.” - *Vince Lombardi*

Football game at progress at the university grounds.



“Gold medals aren't really made of gold. They're made of sweat, determination, and a hard-to-find alloy called guts.” - *Dan Gable*

Football and volleyball in progress at the university.



“It's not whether you get knocked down; it's whether you get up” - *Vince Lombardi*

Spirited game of kabaddi and badminton in progress at the university.

Hostel

We were born to stand out.

International students feeling at home as they strike a pose at the university.



“A good roommate may be the single most important thing to have when one is away at school.” -Barbara Dana

Hostel rooms are the oasis that bring lost souls together. International students chilling out in a personalized room post a hard day at the university.



“Find a group of people who challenge and inspire you; spend a lot of time with them, and it will change your life.” -Amy Poehler

Friendships forged for life at the university.



“Ah college years, those were the days.” - E.A. Bucchianeri

The grind, the fun, interminably mixed, that is what university life is.



Teachers' Life

UNIVERSITY OF LUCKNOW

"If a country is to be corruption free and become a nation of beautiful minds, I strongly feel there are three key societal members who can make a difference. They are the father, the mother and the teacher."- APJ Abdul Kalam

With more than 400 teachers currently employed at the university, the positive vibrations of teaching, research, mentorship, and even fun, reverberate night and day.



“One flag, one land, one heart, one hand, one nation evermore!”
-OliveWendell Holmes

Leading the celebrations of the 74th Independence day on August 15, 2020, Vice Chancellor, Prof. Alok K. Rai. Trying times but nation always ahead!

"Teachers have three loves: love of learning, love of learners, and the love of bringing the first two loves together."- *Scott Hayden*

Class in progress at the university. The Covid-19 slowed us down but did not diminish our vigour and dedication.



Some work, some fun!

Top left : Studio recording in progress for video lectures.

Bottom left: A hybrid online –offline class.

Top right : A cup of tea, laughter and some work at the teachers' staff club.

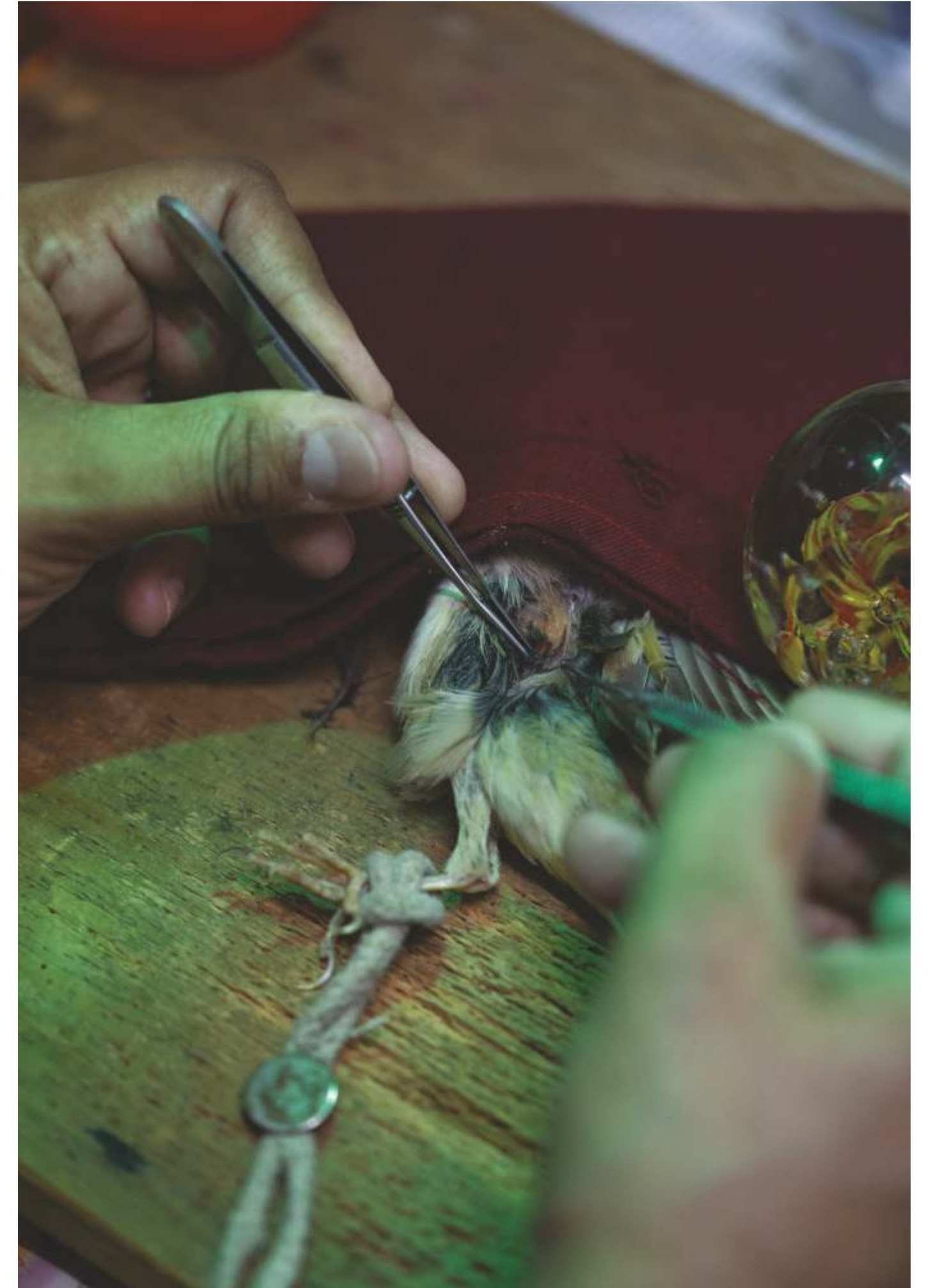
Bottom right : A table tennis game in progress at the teachers' staff club.





"Research is to see what everybody else has seen, and to think what nobody else has thought."- *Albert Szent-Gyorgyi*

Research in progress at various laboratories of the university.





Amenities

UNIVERSITY OF LUCKNOW

"I always say if the house I live in is comfortable, and I have all the amenities I need, then what more can you ask for?"- *Ray Allen*

To make the university as comfortable a nook as possible, we have striven to provide to the students, faculty and non-teaching staff as many amenities as we can. From a cooperative society for teachers as well as non teaching staff, banks, post office, reservation counter, central mess, canteen, girls common room and many more.



“His achievements were many and varied, but he was himself greater than the greatest of his achievements.” – *KM Munshi* statement about Pandit Madan Mohan Malviya

The magnificent wood paneled entrance to the Malviya Sabhagar named after a great visionary Pandit Madan Mohan Malviya. Constructed in 1864, in the name of British soldier William Benett and initially known as Bennet Hall, this hall, witness to all major events of the university, was renamed as Malviya Sabhagar in 1947.

The interiors of the magnificent Malviya Sabhagar, the very air echoes with the wisdom and gravitas of the luminaries that have graced its presence. On the verge of collapse in 2001, the present day Malviya Sabhagar, post painstaking renovation, shines bright, ready to take on yet another century of knowledge.



Hari Krishna Awasthi Sabhagar.

This modern conference hall is named after the 25th vice chancellor of the university, Shri H K Awasthi (1989-1992). The vice chancellor during his tenure did not take his salary but left it with the university. It was this corpus fund and the interest accrued that funded the construction of this conference hall.



Bottom left: Prof. Radha Kamal Mukherjee Hall previously known as JK Hall was first inaugurated in 1949. It was renamed in 2018 after its renovation into a state of the art conference hall.

Top right: Maharaja Singh gymnasium.

Bottom right: Girls common room.



Top left: Way to the post office, railway reservation centre and e-savidha kendra of the university

Bottom left: Cooperative Lending Library or CLL of the university, issues books for an academic session and is a life raft to the students who cannot afford to buy books.

Top right: State Bank of India, Lucknow University branch

Bottom right: UCO Bank, Lucknow University branch





University of Lucknow has a pride of place in the annals of academic history of the country both chronologically and academically. It is one of the oldest universities of not only the state but also of the country, being the eleventh to have been established.

It was the first residential university of the country and was set up on lines of modern teaching and research universities of England. This university in 1921 brought together the *crème de la crème* of the country to lay the foundations of an academic behemoth. 100 years later, the foundation still holds strong and keeps giving birth to new promising academic sprouts year after year.

As we are completing 100 years, the University of Lucknow has grown into 'the academic lighthouse' of the state of Uttar Pradesh. The university, currently, has 170 affiliated colleges and this number is poised to shoot up from the next academic session with colleges of four new districts joining the ranks. The university campus currently offers 147 programs with total student strength of 16477, almost 50% being girls. Taking into account the affiliated colleges, the University of Lucknow yearly provides education to 1,33,655 students across 246 programs.

To mark its advent into the centenary year, the University of Lucknow has taken revolutionary steps under the leadership of its Vice Chancellor, Prof. Alok Kumar Rai. These steps are so designed so as to set the future course of University of Lucknow for the coming 100 years; years of 365x24x7 academic access to, as well as mentoring of the student. The path breaking strides made by the University of Lucknow can be broadly grouped under various strategic plans,



The Journey goes on...

Prof. Mukul Srivastava
Dr. Geetanjali Mishra

which have been designed to turn the university into a trendy, socially present, socially responsible, academically lit, direction providing institution that celebrates academics, encourages creativity, holds hands and lifts the students and nurtures learners for life.

1. Academic Excellence: In its centennial year, the university breached major rankings, nationally and globally.

a. The University of Lucknow featured in the **India Today Ranking** at number 22 and the Faculty of Law breached that very ranking at 10th position in the country.

b. In the **Education World** rankings for government educational institutions, we featured at 51st position, and were the top state funded generalist university in the state.

c. In the **Webometrics** ranking of World universities, the university featured at rank 88.

d. In the global ranking system, **UniRank**, the university came up at rank 46 in the country.

e. In the most prestigious global ranking, **Times Higher Education** ranking, the university was amongst the 63 institutes from the country that made the cut this year.

2. Quality Education

a. **CBCS:** A unique 10 pillared CBCS programme was designed by the university, for the session 2020-2021, making it one of the most advanced CBCS programmes of the country. It covers a wide ranging

gamut of wholesome academic options in the form of inter-departmental electives, intradepartmental electives, value added noncredit electives, value added credit electives, freeze electives, optional electives, uniform credit across departments, MOOCs, dissertations and internships.

b. **Online classes:** The university faculty hit the track running with a smooth transition from offline to online classes. The online transition of academic life has followed the 3 C model, conduct in classes, connect with students and content creation. Courses were completed on time, mid-term evaluations conducted online and new session started almost in sync with government directives.

c. **SLATE:** Keeping a futuristic view and making the best of the hand dealt to us in in these trying times, the university stepped up to the plate and launched its own personalized learning management system **SLATE** (Strategic Learning Application for Transformative Education). It is a copyright of the university and has facilities for taking online classes, uploading study material, submitting and assessing assignments and taking tests.

d. **FLIP classes:** Keeping in mind the burden of digital data on the students and connectivity issue, the university has initiated flip classes with students being given access to study material prior to classes followed by problem solving and discussions in class.

e. **Professor of Eminence:** To keep the wisdom of the gurus closer, the university launched a professor of eminence scheme, to harness the expertise of the retired professors.

f. **Diploma in Garbh Sanskar:** A programme that was the vision of the honourable Governor of UP, Smt. Anandiben Patel, was brought to fruition by the university in its centenary year. The first batch of students has joined to learn the ins and outs of holistic prenatal care through traditional, cultural and modern approaches.

g. **Happy Thinking Lab:** To promote a positive approach a

dedicated lab has been setup.

h. Faculty of Yoga and Alternative Medicine: A new faculty dedicated to yoga, holistic wellbeing and alternate medicines has been proposed and is in the making.

3. Limitless access to academic resources

a. **YouTube channel:** The university strengthened its digital footprint with all the departments of the university launching their YouTube channels in addition to the official channel of University of Lucknow (https://youtube.com/c/UniversityofLucknow_Official). The University of Lucknow's official YouTube channel which started barely 6 months ago has qualified for YouTube's monetization partner programme having completed the required 4000 hours of viewing in record time, and having gathered 6 times the minimum subscriber count required for monetisation. The channel has a view count of over 1 lakh 60 thousand in just 96 uploaded videos, and has been accessed by people from all over the country, with more than 690 thousand impressions across the web (day of going to press).

b. **Online resources:** Other than creating e-content in the form of notes and video lectures on its own website, the university has also enthusiastically put forth its academic foot on the state governments e-content portal. By the time of going to the press, the university had uploaded 11700 e-contents.

c. **Renovated website 1 crore 15 lac hits:** The renovated university website that was inaugurated by the honourable Governor of UP, Smt. Anandiben Patel, has amassed more than 1 crore 15 lac hits since February, 2020.

4. Student-Teacher Bonding

a. **Student OPD:** Or to be precise Our Pupils' Day. This scheme aims to provide definitive access of students to at least one teacher on





gamut of wholesome academic options in the form of inter-departmental electives, intradepartmental electives, value added noncredit electives, value added credit electives, freeze electives, optional electives, uniform credit across departments, MOOCs, dissertations and internships.

b. Online classes: The university faculty hit the track running with a smooth transition from offline to online classes. The online transition of academic life has followed the 3 C model, conduct in classes, connect with students and content creation. Courses were completed on time, mid-term evaluations conducted online and new session started almost in sync with government directives.

c. SLATE: Keeping a futuristic view and making the best of the hand dealt to us in these trying times, the university stepped up to the plate and launched its own personalized learning management system SLATE (Strategic Learning Application for Transformative Education). It is a copyright of the university and has facilities for taking online classes, uploading study material, submitting and assessing assignments and taking tests.

d. FLIP classes: Keeping in mind the burden of digital data on the students and connectivity issue, the university has initiated flip classes with students being given access to study material prior to classes followed by problem solving and discussions in class.

e. Professor of Eminence: To keep the wisdom of the gurus closer, the university launched a professor of eminence scheme, to harness the expertise of the retired professors.

f. Diploma in Garbh Sanskar: A programme that was the vision of the honourable Governor of UP, Smt. Anandiben Patel, was brought to fruition by the university in its centenary year. The first batch of students has joined to learn the ins and outs of holistic prenatal care through traditional, cultural and modern approaches.

g. Happy Thinking Lab: To promote a positive approach a



dedicated lab has been setup.

h. Faculty of Yoga and Alternative Medicine: A new faculty dedicated to yoga, holistic wellbeing and alternate medicines has been proposed and is in the making.

3. Limitless access to academic resources

a. YouTube channel: The university strengthened its digital footprint with all the departments of the university launching their YouTube channels in addition to the official channel of University of Lucknow (https://youtube.com/c/UniversityofLucknow_Official). The University of Lucknow's official YouTube channel which started barely 6 months ago has qualified for YouTube's monetization partner programme having completed the required 4000 hours of viewing in record time, and having gathered 6 times the minimum subscriber count required for monetisation. The channel has a view count of over 1 lakh 60 thousand in just 96 uploaded videos, and has been accessed by people from all over the country, with more than 690 thousand impressions across the web (day of going to press).

b. Online resources: Other than creating e-content in the form of notes and video lectures on its own website, the university has also enthusiastically put forth its academic foot on the state governments e-content portal. By the time of going to the press, the university had uploaded 11700 e-contents.

c. Renovated website 1 crore 15 lac hits: The renovated university website that was inaugurated by the honourable Governor of UP, Smt. Anandiben Patel, has amassed more than 1 crore 15 lac hits since February, 2020.

4. Student-Teacher Bonding

a. Student OPD: Or to be precise Our Pupils' Day. This scheme aims to provide definitive access of students to at least one teacher on



each day of the week for issues pertaining to academics and otherwise. Each department has put up a weekly time table of the availability of teachers to students. This allows the student one-on-one time with a teacher for problems that they may otherwise hesitate to bring up in the classroom

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/opd>).

b. TREE: Teaching, Reaching, Emboldening, Evolving. This program provides each post graduate student with a faculty mentor who is responsible for handholding the student through curricular, extracurricular and social aspects and overall growth of during their stay in the university. The mentors will ensure the facilitation of untapped as well as tapped potential and work as an anchor to their mentees (<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/tree>)

c. Twitter Leap: All administrative heads opened twitter accounts for better communication with students and quick resolution of their issues.

5. Financial Strengthening of Students

a. Karmayogi scheme: The University of Lucknow has taken a novel initiative to make students develop their skills and make themselves reliant. The university encourages the students to take up part time jobs in the campus, to support their expenditure partially under the Karmayogi Scheme. The scheme aims to earn while learn, involve students in activities of the University, provide work experience to students before they obtain their real jobs, teach students dignity of labour and channelize youthful energies of the students in a positive direction

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/Karmayogi-Scheme>).

b. Chattra Kalyan Scholarship: The Chhatra Kalyan Scholarship will provide financial assistance to needy and underprivileged students of upto Rs. 15,000/- (Rupees Fifteen Thousand only) or actual annual/semester fees, whichever is less



(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/Chhatra-Kalyan>).

c. Samvardhan: Under this scheme, any faculty or alumnus can start a scholarship for meritorious and needy students. The minimum scholarship amount has been fixed at a yearly Rs. 10000.

6. Promoting Research Excellence

a. BOOST (Building Opportunities for Original and Sustainable Thinking

i. Acclaim: Incentivization Policy: To laud those teachers whose academic achievements have already been recognized at state, national and international forums via recognitions/awards with commendation and certificate of honour, monetary incentive of Rs. 5000/-, medal and announcement in the newsletter and website

ii. Protsahan, A Novel Scheme for Seed Money: For promoting quality research and encouraging potential researchers by providing seed money to the young faculty members of the university

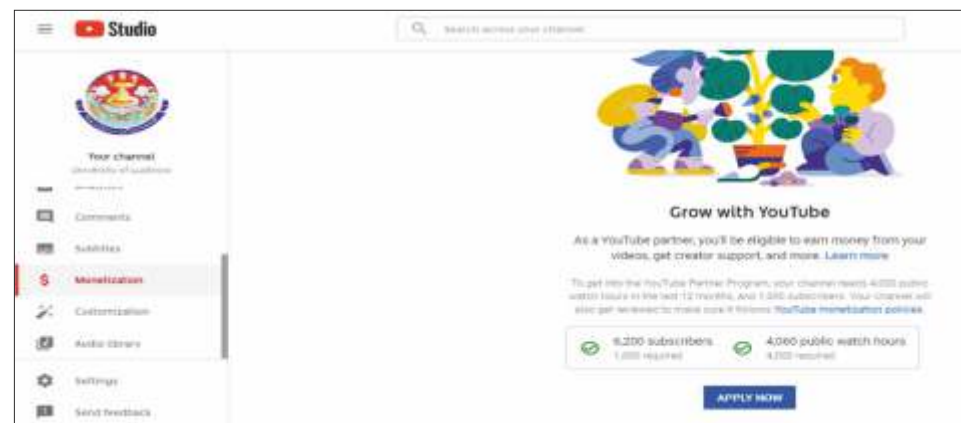
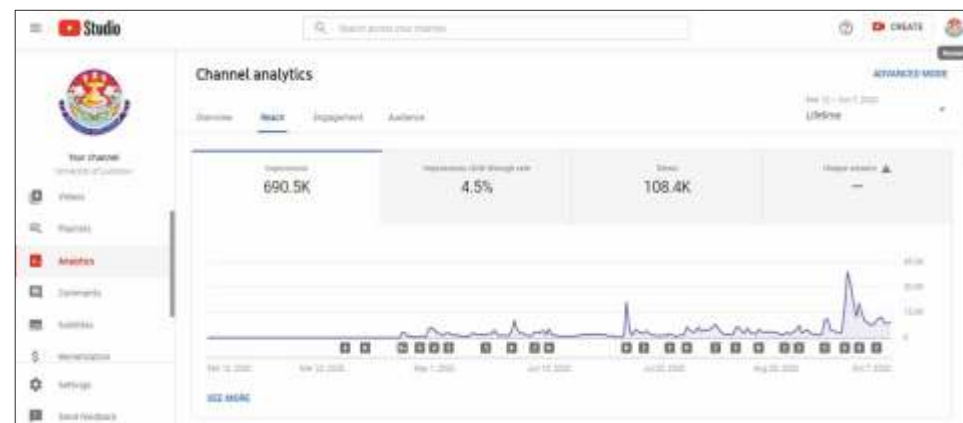
iii. Uddeepan, Best Research Paper Award: rewarding research scholars and faculty members involved in research activity

b. Incubation grant for Innovation: The University of Lucknow has a prestigious globally recognized research programme. The Faculty of Science has been awarded the DST PURSE grant two terms in a row owing to the high number of citations in the country. To provide the encouragement to turn research papers into innovative schemes and also to encourage other non-science innovative business ideas, the University of Lucknow in its centenary year has launched a scheme for providing Rs. 5 lac incubation grant for each deserving idea.

c. Webinars: The University took advantage of the digital shift in education during Covid-19 times and to keep the faculty and students on their academic toes, conducted a slew of webinars, with at least one being conducted every day in the month of May and June.

d. MoUs: The university in its centennial year has already signed





University of Lucknow VICE - CHANCELLORS

each day of the week for issues pertaining to academics and otherwise. Each department has put up a weekly time table of the availability of teachers to students. This allows the student one-on-one time with a teacher for problems that they may otherwise hesitate to bring up in the classroom

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/opd>).

b. TREE: Teaching, Reaching, Emboldening, Evolving. This program provides each post graduate student with a faculty mentor who is responsible for handholding the student through curricular, extracurricular and social aspects and overall growth of during their stay in the university. The mentors will ensure the facilitation of untapped as well as tapped potential and work as an anchor to their mentees

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/tree>)

c. Twitter Leap: All administrative heads opened twitter accounts for better communication with students and quick resolution of their issues.

5. Financial Strengthening of Students

a. Karmayogi scheme: The University of Lucknow has taken a novel initiative to make students develop their skills and make themselves reliant. The university encourages the students to take up part time jobs in the campus, to support their expenditure partially under the Karmayogi Scheme. The scheme aims to earn while learn, involve students in activities of the University, provide work experience to students before they obtain their real jobs, teach students dignity of labour and channelize youthful energies of the students in a positive direction

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/Karmayogi-Scheme>).

b. Chhatra Kalyan Scholarship: The Chhatra Kalyan Scholarship will provide financial assistance to needy and underprivileged students of upto Rs. 15,000/- (Rupees Fifteen Thousand only) or actual annual/semester fees, whichever is less

(<https://www.lkouniv.ac.in/article/en/Chhatra-Kalyan>).

c. Samvardhan: Under this scheme, any faculty or alumnus can start a scholarship for meritorious and needy students. The minimum scholarship amount has been fixed at a yearly Rs. 10000.

6. Promoting Research Excellence

a. BOOST (Building Opportunities for Original and Sustainable Thinking

i. Acclaim: Incentivization Policy: To laud those teachers whose academic achievements have already been recognized at state, national and international forums via recognitions/awards with commendation and certificate of honour, monetary incentive of Rs. 5000/-, medal and announcement in the newsletter and website

ii. Protsahan, A Novel Scheme for Seed Money: For promoting quality research and encouraging potential researchers by providing seed money to the young faculty members of the university

iii. Uddepan, Best Research Paper Award: rewarding research scholars and faculty members involved in research activity

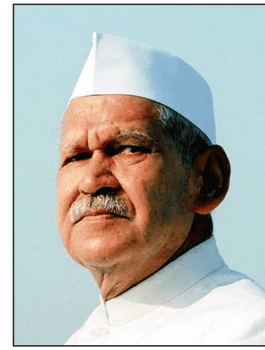
b. Incubation grant for Innovation: The University of Lucknow has a prestigious globally recognized research programme. The Faculty of Science has been awarded the DST PURSE grant two terms in a row owing to the high number of citations in the country. To provide the encouragement to turn research papers into innovative



1. Rai Bahadur G.N. Chakravarty	1920 - 1926	22. Prof. Ratan Shanker Mishra	1982 - 1985
2. Dr. S.B. Camron	1926 - 1930	23. Prof. Shambhu Nath Jha	1985 - 1986
3. Pandit Jagart Narain	1930 - 1932	24. Prof. Sheetla Prasad Nagendra	1986 - 1989
4. Dr. R.P. Pranjpe	1932 - 1938	25. Prof. Hari Krishna Awasthi	1989 - 1992
5. S.M. Habibullah	1938 - 1941	26. Prof. Mahendra Singh Sodha	1992 - 1995
6. Kunwar Sir Maharaj Singh	1941 - 1941	27. Prof. Suraj Prasad Singh	1995 - 1997
7. Let. Col. Raja Bisheswar Dayal Seth	1941 - 1947	28. Prof. Ramesh Chandra	1997 - 1998
8. Acharya Narendra Dev	1947 - 1951	29. Prof. K.K. Kaul	1998 - 1998
9. Acharya Jugal Kishore	1951 - 1955	30. Prof. Roop Rekha Verma	1998 - 1999
10. Dr. Radha Kamal Mukherjee	1955 - 1958	31. Prof. Devendra Pratap Singh	1999 - 2002
11. Prof. K.A.S Ayyar	1958 - 1960	32. Prof. Shiv Bahadur Singh	2002 - 2005
12. Prof. Kali Prased	1960 - 1961	33. Prof. Ram Prakash Singh	2005 - 2008
13. Randhir Singh	1961 - 1961	34. Prof. Ajaib Singh Brar	2008 - 2009
14. Dr. A. Vittal Rao	1961 - 1968	35. Prof. Upendra Nath Dwivedi	2009 - 2009
15. Dr. Mukund Behari Lal	1968 - 1971	36. Prof. Manoj Kumar Mishra	2009 - 2012
16. Dr. Gopal Tripathi	1971 - 1973	37. Gopbandhu Pattanaik, I.A.S	2012 - 2013.
17. Ashok Kumar Mustafy I.A.S.	1979 - 1981	38. Dr. Sarjerao Bhaurao Nimse	2013 - 2016
18. Prof. Rajendra Vir Singh	1975 - 1979	39. Prof. Surendra Pratap Singh	2016 - 2019
19. Prof. Girja Shanker Mishra	1978 - 1981	40. Shailesh Kumar Shukla	2019 - 2019
20. Girja Prasad Pandey, I.A.S.	1979 - 1981	41. Prof. Alok Kumar Rai	2019
21. Prof. Ratan Prakash Agarwal	1981 - 1982		



Distinguished Alumni



Dr. Shankar Dayal Sharma
Former President of India



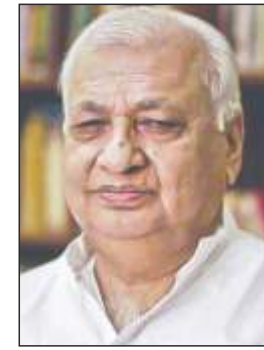
Syed Sibtey Razi
Politician



Surjeet Singh Barnala
Politician



Lalji Tandon
Politician



Arif Ahmad Khan
Politician



Adarsh Sein Anand
Former Chief Justice of India



Dr. Rajiv Kumar
Economist



V Mohini Giri
Social Worker



Swami Chinmayanand
Spiritual Leader



Seema Mustafa
Journalist



Vinod Mehta
Journalist



Rahul Kanwal
Journalist



Dr. Navin Khanna
Scientist, ICGB (Padam Shri)



Dr. Ritu Karidhal
Scientist, ISRO



Dr. Vinod Bhakuni
Scientist, CSIR-CDRI



Kavi Pradeep
Lyricist



Dr. Kumkum Dhar
Kathak Dancer



Qurratulain Hyder
Author



Amitabh Bhattacharya
Lyricist & Singer



Malini Awasthi
Artist

* picture courtesy Google

A Few Dignitaries on Campus





Name of institution : University of Lucknow
Established : 1920
City : Lucknow
State : Uttar Pradesh
Country : India
Latitude & Longitude : 26.862, 80.936
Postal Address : University of Lucknow, Lucknow 226007, UP, India
email : vc@lkouniv.ac.in
website : www.lkouniv.ac.in
YouTube : https://youtube.com/c/UniversityofLucknow_Official
Twitter : @lkouniv

The Team



Anshul Mehrotra
Alumnus, Department of Journalism
& Mass Communication
Photographer & Film Maker

Prof. Mukul Srivastava
Department of Journalism &
Mass Communication
University of Lucknow

Dr. Geetanjali Mishra
Department of Zoology
University of Lucknow

Aftab Anwar
Department of Journalism &
Mass Communication
University of Lucknow

Second Campus, University of Lucknow.

